# बैसवारा के ये कवि

(बैसवारे के कवियों की रचनाओं का संकलन)



संपादकः

राजबख़्श सिंह

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक का नाम | | ***बैसवारा के ये कवि*** |
| संपादक | : | राजबख़्श सिंह |
| वर्ष | : | 2003 |
| मूल्य | : | **Rs 101/-** (एक सौ एक रुपये मात्र) |
| प्रतियाँ | : | **1000** |
| मुद्रक | - | **प्रकाशन केन्द्र,** निकट डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ ☎ 2323035, 2367314 |
| प्रकाशक | · | हरिदास मानव सेवा संस्थान, ग्राम-पोस्ट बाजितपुर, उन्नाव, उत्तर प्रदेश। |

# प्रेरणा-श्रोत

1 **डॉ० उपेन्द्र बहादुर सिंह**
*पूर्व विभागाध्यक्ष*
बैसवारा डिग्री कालेज, लालगंज।

2 **डॉ० श्याम सिंह,** *एम.डी.एस.*
*प्रधानाचार्य*
महात्मा गॉधी डेण्टल कालेज एण्ड हास्पिटल
पाण्डचेरी।

3. **श्री मोहन बख्शी**
स्वरूप नगर, कानपुर।

# प्रस्तावना

यह सर्वमान्य तथ्य है कि माँ भारती के उपासकों में बैसवारे के लोगों की संख्या सर्वाधिक है। बैसवारे के साहित्यिक योगदान पर साहित्यप्रेमियों को गर्व है। प्रचुर साहित्य अब भी बैसवारे में अप्रकाशित है। कई पूर्व प्रकाशित कृतियाँ अब अप्राप्य हैं। ऐसे में सुधी-साहित्य प्रेमियों द्वारा बैसवारे के कालजयी साहित्यकारों की रचनाओं के पुन प्रकाशन की आवश्यकता है। कई समकालीन साहित्यकार, गोष्ठियो एव मचों पर तो समादृत है किन्तु उनका मुद्रित साहित्य न होने के कारण उनकी ख्याति प्रदेश, देश और विदेश की सीमाओं तक नहीं पहुँच पा रही है।

प्रस्तुत संकलन के प्रकाशन के पीछे सिर्फ मेरी यही कामना रही है कि काव्य रसिक पाठकों तक बैसवारे के कवियों की रचनायें पहुँचाई जायें। इस सकलन में यदि कोई विशेषता है तो उसका श्रेय मेरे मित्रों को है और कोई त्रुटि है तो वह मेरी है। जिन कवियों ने मेरे अनुरोध पर प्रकाशन हेतु अपनी रचनायें दी उनका मै आभारी हूँ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सर्जकों, विद्वतजनो एवं सुधी पाठकों का स्नेहिल आशीष मुझे मिलेगा और श्री हरिदास मानव सेवा सस्थान आगामी सकलन भी आप सबके सहयोग एव आशीर्वाद से शीघ्र प्रकाशित करेगा।

हम अभी कई साहित्यकारों की रचनाओं को चाहते हुए भी इस संकलन मे सम्मिलित नहीं कर पाये हैं। एतदर्थ क्षमा।

*स्नेहाकांक्षी*

राजबख़्श सिंह

# एक सार्थक परम्परा

उन्नाव तथा रायबरेली जनपदो का एक विशेष भू-भाग वर्तमान में "बैसवारा" के नाम से जाना जाता है। बैसवारा क्षेत्र प्राचीनकाल से पौराणिक, ऐतिहासिक तथा वाणिज्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है। इसकी भौगोलिक सीमाओं को समय ने बदलते देखा है। इस क्षेत्र ने हिन्दी जगत को बहुत से अमूल्य रत्न प्रदान किये हैं, जिनकी नामावली का उल्लेख करना सम्प्रति अभीष्ट नहीं है। हिन्दी साहित्य से यदि इस क्षेत्र के प्रकाशमान वाणी पुत्रो के नाम और उनका योगदान हटा दिया जाये तो आधुनिक हिन्दी का वितान तना न रह सकेगा।

इसी बैसवारा क्षेत्र के साहित्य प्रेमी शिक्षक एवं सक्रिय युवा व्यक्तित्व श्री राजबख्श सिंह ने ***"बैसवारे के ये कवि"*** शीर्षक से बाईस कवियों की रचनाओं का संकलन प्रकाशित करने का प्रयास किया है। इसके लिए वह साधुवाद के पात्र हैं।

इसके पूर्व *स्व० धर्मेन्द्र 'आलोक'* के प्रयासों से ***'झरोखे की धूप'*** तथा। *श्री शीलेन्द्र सिंह चौहान* के संपादन में ***'आराधना के स्वर'*** काव्य संकलन का प्रकाशन हो चुका है। 'बैसवारे के ये कवि' उस परम्परा का सार्थक निर्वहन है।

इस सकलन के माध्यम से क्षेत्र के साहित्यिक पुरोधाओं पं० जैगोविन्द शर्मा से लेकर नयी पंखुरियों तक की कृतियों के साहित्य प्रेमी सुधीजन रसपान कर सकेगे। नयी कलमों में कु० नीरजा सिंह में भी उच्चकोटि की रचनाओ का सृजन करने की क्षमता है। "बैसवारे के ये कवि" के प्रकाशन का प्रयास नयी पीढ़ी को प्रेरणा देगा।

इस विश्वास के साथ शुभ मंगल कामना-बधाई।

**श्री कमला शकर अवस्थी**
(एडवोकेट)
प्रबन्धक, निराला शिक्षा निधि- उन्नाव

# शुभकामना संदेश

हरिदास मानव सेवा संस्थान द्वारा बैसवारे के ये कवि नामक काव्य संग्रह का प्रकाशन सराहनीय है। आज पद्य साहित्य के पाठकों की सख्या घट रही है। अतः उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन करके पाठकों की अभिरुचि को जाग्रत करने की अति आवश्यकता है। अनेक श्रेष्ठ साहित्यकार अर्थाभाव के कारण अप्रकाशित ाते हैं। काश ! इसी तरह एक नहीं अनेक काव्य संग्रह शेत हो।

है कि बैसवारे की साहित्यिक रत्नमंजूषा की यह मणियाँ ा पाठकों को प्रभावित करेंगी।

भवदीय

**वी० के० सिंह**
वाइस एडमिरल (ई.एन.टी.सर्जन)
कमाण्डिंग आफीसर, भारतीय नौसेना
पोत-अस्पताल, कोलाबा
नवी मुम्बई - 400005

(मंत्री)
ा संस्थान
र, उन्नाव

शीला दीक्षित
मुख्यमंत्री






राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय,
आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली - 110002

# संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री हरिदास मानव सेवा सस्थन द्वारा **"बैसवारे के ये कवि"** नामक कृति के प्रकाशन का संकल्प किया है। आशा है यह कृति उपयोगी होगी।

मैं "बैसवारे के ये कवि" नामक कृति के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

शीला दीक्षित
**शीला दीक्षित**
मुख्यमंत्री (दिल्ली)

*प्रतिष्ठा में*

**श्री राजबख्श सिंह (मंत्री)**
श्री हरिदास मानव सेवा सस्थान
ग्राम० पोस्ट- बाजितपुर, उन्नाव

**दीपक कुमार**
सासद उन्नाव (उ० प्र०)
*सदस्य:* स्थायी समिति- उद्योग,
परामर्शदात्री समिति- कोयला,
आवास समिति- लोकसभा




2-बी, वाजिदपुर, जाजमऊ, कानपुर
दूरभाष 463461
125, साऊथ एवेन्यू, नई दिल्ली,
दूरभाष. 3792692

# सन्देश

आप द्वारा प्रेषित किया गया **"बैसवारा के ये कवि"** कृति हेतु शुभकामना संदेश पत्र दिनाक 19 जनवरी, 2003 का प्राप्त हुआ है।

बडे हर्ष का विषय है कि हिन्दी साहित्य में "बैसवारा के साहित्यकारो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उक्त संस्था ने "बैसवारे के ये कवि" नामक कृति के प्रकाशन का संकल्प लिया है। इसके लिए हमारी ओर से श्री हरिदास मानव सेवा संस्थान को हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार हो। ईश्वर से कामना है कि यह संस्था हमेशा के लिए सफल रहे।

सधन्यवाद।

**दीपक कुमार**
सासद

*प्रतिष्ठा में*

**श्री राजबख्श सिंह (मंत्री)**
श्री हरिदास मानव सेवा संस्थान
ग्राम० पोस्ट- बाजितपुर, उन्नाव

राज बहादुर सिंह चन्देल

45, बाबूगंज, उन्नाव
फोन न० - 820909




# सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री हरिदास मानव सेवा संस्थान वाजितपुर, उन्नाव **"बैसवारे के ये कवि"** नामक काव्यकृति का प्रकाशन करने जा रहा है। आज व्यक्ति उच्च आदर्शों से दूर होता जा रहा है। त्याग, प्रेम, बलिदान एवं सहानुभूति जैसी शिक्षाये परम्परागत रूप से जो हमें पारिवारिक दायरे से प्राप्त होती थीं उनसे हम विरत होते जा रहे हैं। राष्ट्र के पुनर्निर्माण में स्वदेश प्रेम की भावना जागृत करके ही मानव मूल्यों की पुर्नस्थापना की जा सकती है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक अमर शहीद राजा रावरामबख्श सिंह के त्याग और बलिदान की अमर गाथा का सन्देश स्वदेश प्रेम की भावना जागृत करने मे सफल होगी- ऐसी मेरी कामना है।

राज बहादुर सिंह चन्देल

**राज बहादुर सिंह चन्देल**
सदस्य विधान परिषद उत्तर प्रदेश

*प्रतिष्ठा में*

**श्री राजबख्श सिंह (मंत्री)**
श्री हरिदास मानव सेवा संस्थान
ग्राम० पोस्ट- वाजितपुर, उन्नाव

**Dr. S. S. Awasthi**
*M A (Hindi), M Mus , D Mus , D Litt*
Ex-Professor & Head, Dept of Music & Fine Arts,
Allahabad University, Allahabad
Retd Principal, Bhatkhande Music College, Lko
Member of Audition Board of All India Radio &
Television, New Delhi
Top Grade Artist, A I R. & Television

M-I55, Sector-B, Aliganj
Lucknow - 226 024, India

Tel 0522-385877
Fax 0522-371246

# सन्देश

हमारे बचपन के दिनों में बैसवारे में- जगह-जगह कवि सम्मेलन होते थे। बक्सर में प्रत्येक पूर्णमासी को गंगा भक्तों के बीच कविता पाठ माँ भागीरथी के घाटों पर हुआ करता था- एक साहित्यिक वातावरण था जिसका आज अभाव सा हो गया है।

आदरणीय पं० राम शंकर त्रिपाठी व प० देवदत्त मिश्र की सत्प्रेरणा से सुमेरपुर में ही एक विराट कवि सम्मेलन हुआ करता था। बर-बरातों में शिष्टाचार के आयोजनों में साहित्य रस बरसता था- अब वे चर्चायें- कथा कहानी की बाते लगती हैं।

पद्य साहित्य संकट के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय मे, **"बैसवारे के ये कवि"** कृति का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है।

चि० राजबख्श सिंह जी को उनके जीवन्त एव प्राणवान महत् सत कार्य के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें अर्पित है।

सादर,

(डॉ० सुरेन्द्र शंकर अवस्थी)

# बैसवारा के कवि : एक दृष्टि

बैसवारा अपनी तलवार के लिए लोक विख्यात रहा है किन्तु उसकी लेखनी भी कम महत्वशालिनी नहीं रही, क्षेत्रीय कवियों का काव्य इस तथ्य का प्रमाण है। रसवर्षिणी इस लेखनी ने इन्द्रिय-संयम के महत्व का प्रतिपादन भी किया और नारियो के पादक चित्र भी खींचे, अलौकिक के रहस्यों पर से आवरण भी हटाया और लौकिक धर्म का विधान भी प्रस्तुत किया, प्रकृति के रगीन दृश्यों पर भी प्रकाश फेंका और मानव के दैत्य पर आसू भी बहाये, जीवन के प्रति मोह भी उत्पन्न किया और राष्ट्र हेतु जीवनोत्सर्ग के भाव भी जगाये। साराशत मानव मन की प्रत्येक लहर को उससे वाणी मिली।

यहाँ के कवियों की देन बहुमूल्य है। मुल्लादाउद ने प्रेमाख्यानक काव्य-प्रसाद की नींव डाली, क्षेम ने इस्लाम धर्म के गौरव का गान गाकर हिन्दुओं की ओर से उदारता का परिचय दिया, सुखदेव मिश्र ने छन्द रचना के नियमों का सागोपाग वर्णन किया, दूलनदास, भीषमदास, बालदास, अचलदास आदि ने आडम्बर एव पाखड के स्थान पर सात्विकता, आत्मसयम एव सतोषवृत्ति पर बल दिया, शम्भूनाथ मिश्र ने अलकार रस, एव नायिका भेद का अति सूक्ष्म निरूपण किया और शम्भूनाथ त्रिपाठी ने मानव प्रवृत्ति एव जड-प्रकृति के यथार्थ, सरस, मोहक एव संश्लिष्ट चित्र उतारे।

तीरथराज का "समर सार" युद्धकला की शिक्षा देता, धनसिह का 'रस-रास' काव्यशास्त्र का पाठ पढाता, दयानिधि का "शालिहोश" अश्वविषयक जानकारी कराता, शेखनिसार का "यूसुफ-जुलेखा' हृदय में मानव प्रेम का दीपक जलाता, सुवश का उमराव कोष जनभाषा को साहित्यिक साचे में ढालता, और गिरधारी का "रस मशाल" रस की ऐसी वर्षा करता है कि पाषाणो के हृदय में भी हरियाली लहरा उठती है। लाल गिरधर के "नायिका भेद के समान पदों में लिखा हुआ दूसरा नायिका भेद नहीं, भाव की "रामायण" के समान बरवे छन्द में लिखी हुई वृहदाकार दूसरी रामायण नहीं, बेनी के भड़ौओं के समान हास्य की पिचकारियाँ छोड़ने वाले हिन्दी काव्य साहित्य में दूसरे भडौवे नहीं और कृष्ण के जीवन-वृत्त पर अवधी में लिखा गया प० द्वारिका प्रसाद जी मिश्र के "कृष्णायन" की टक्कर का दूसरा कृष्ण सम्बन्धी महाकाव्य नहीं।

बैसवारे के कवि युग-परिवर्तनकारी रहे हैं। दुलारे, बजरंग, छत्रपति, ज्वालाराय आदि जनकवियो ने रीतिबद्ध विलासात्मक हिन्दी काव्य साहित्य को सर्वप्रथम राष्ट्रीयता के तत्व दिये, आचार्य महाबीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा को नया कलेवर दिया और निराला ने छन्दो को नई प्रणाली दी। कवियों को रचने तथा सवारने वाले कवि आपको हर क्षेत्र मे मिल जायेंगे किन्तु कवियों को जन्म देने और सँवारने वाला 'सनेही' एकमात्र बैसवारा क्षेत्र मे ही मिलेगा।

'सब तजि गहौ स्वतन्त्रता नहि चुप लातै खाव, राजा करे सो न्याय है पासा परै सो दाव

के रचयिता जिन्दादिल कवि [illegible] मिश्र, जीवन उन्नायक तत्वो से युक्त काव्य रचनाओं के प्रणेता बलदेव प्रसाद मिश्र तथा शिवरत्न शुक्ल सिरस काल्पनिक चाद सितारों के लोक से काव्य को यथार्थ की ठोस धरती पर उतारने वाले शिवमगल सुमन, अतीत के गायक, वर्तमान के मार्ग प्रदर्शक और भविष्य के दिशा-निर्देशक रूपनारायण पाण्डेय, रीतियुगीन रसमयी परिपाटी को अपनाकर भी शोषित जनों की दीनदशा पर आसू बहाते हुए देश तथा जाति के उन्नयन मे रत ब्रजनन्दन, ''नहीं गाते स्वदेश के गायन जो, वह गायक है नहीं गाय के है''- का उद्‌घोष करने वाले अवधेश मालवीय, हास्य रस को मोहक गरिमा देने वाले रमई काका, रूढ लोक-जीवन को लोक-रुचि के छन्दों द्वारा ही नव (शक्ति) तथा नवदृष्टि प्रदान करने वाले मनीराम द्विवेदी ''नवीन'' जीवन के प्रकृति सौन्दर्य पर मुग्ध होने वाले कवि डॉ० रामविलास शर्मा तथा डॉ० उपेन्द्र बहादुर सिह 'उपेन्द्र', ओजपूर्ण स्वरों द्वारा लोकमानस को स्फूर्ति से भर देने वाले 'अमरेश' - हिन्दी काव्य-साहित्य को इसी बैसवारे की देन है।

वेसवारे के ही शिवदुलारे त्रिपाठी 'नूतन', गुलाब रत्न वाजपेयी 'गुलाब', लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी पूरण तोरन देवी लली', रामोदिन दीक्षित 'अभिराम', चन्द्रशेखर मिश्र 'अशेष', रामावतार शुक्ल, माधवनारायण पाण्डेय 'नरेन्द्र', 'श्रीनाथ पाण्डेय 'नरनाथ', नत्था प्रसाद दीक्षित 'मलिन्द', चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि', देवीरत्न अवस्थी 'करील', कृष्ण शकर शुक्ल, शिवबहादुर सिह, राममनोहर त्रिपाठी, गिरजाशकर मिश्र 'गिरिजेश', देवी प्रसाद दीक्षित 'देवेश', सूर्यप्रसाद दीक्षित 'सुरेश', भवरसिह 'भवरेश', काका बैसवारी, रजनीश, मधुकर खरे, गयाप्रसाद श्रीवास्तव 'सरोज', रामशिरोमणि त्रिपाठी 'शिरोमणि', गिरिजाशकर भट्ट 'शेखर', कृष्ण बिहारी अवस्थी चम्पक, हरिनारायण 'जूही', सोनेलाल द्विवेदी, सालिकराम बाजपेई, 'द्विज', सिद्धिनाथ शुक्ल 'सिद्धि' उमाशंकर शुक्ल 'उमेश', बैजनाथ तिवारी 'रसाल' जैसे रस-सिद्ध तथा विचक्षण कवियों का योग भी (हिन्दी काव्य साहित्य की प्रगति मे) कम महत्वपूर्ण नहीं है। सूची लम्बी है और लेख का कलेवर अति सक्षिप्त, अतएव बाध्य होकर अन्य अनेक कवियो का नाम छोड़ना पड़ रहा है।

बैसवारे का काव्य सत्व-गुण-समन्वित है। राष्ट्र और समाज की शान्ति को तोडने वाली घातक आसुरी वृत्तियों को नियन्त्रण में लाने के लिए वह एक सुनिश्चित योजना प्रस्तुत करता है, चारित्रिक विकृति को हेय दृष्टि से देखता और आत्म-शुद्धि पर जोर डालता है। उसका शब्द-शब्द जीवन को प्रकाश देता है, उठाता है और आगे बढ़ाता है। वह सयम का समर्थक, शिवत्व का साधक, सत्विकता का प्रतिनिधि, शान्ति का प्रचारक और प्रकृत सौन्दर्य का उपासक है।

**- डॉ० सूरज प्रसाद शुक्ल**

गल्ला मण्डी, भगवन्त नगर, उन्नाव

# वर दे !

वर दे, वीणा वादिनि, वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे।
काट अन्ध उर के बंधन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तमहर, प्रकाशभर,
जगमग जग, कर दे।
नवगति, नव-लय, तालछंद नव,
नवल कंठ, नव जदल-मंद रव,
नव नभ के नव विहग-वृन्द को,
नव पर नव स्वर दें
वर दें, वीणा वादिन वर दें

–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

*उल्लेखनीय है कि ब्रह्मलीन स्वनामधन्य शिवमंगल सिंह 'सुमन' उपरोक्त वाणी वन्दना के लिये कहा करते थे कि देश-विदेश में किसी भी भाषा में ऐसी वाणी वंदना नहीं है।*

# अनुक्रमणिका







# जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | · | डॉ० अरुण प्रकाश अवस्थी |
| पिता का नाम | . | स्व० जगदीश नारायण अवस्थी |
| जन्म स्थान | | मौरावा |
| ---तिथि | | 17 दिसम्बर 1947 |
| योग्य - | · | एम.ए (हिन्दी, अंग्रेजी, भूगोल, पत्रकारिता) पी-एच.डी |
| प्रकाशित साहित्य | | 1 धर्म और अनुभूति, 2 रावी तट (काव्य), 3 महाराणा का पत्र (काव्य पुरस्कृत), 4 क्रांति का देवता (काव्य), 5 राम श्याम युगल शतक (काव्य पुरस्कृत), 6 असुवन जल सींचि (ललित निबन्ध), 7 वदनीया युगे युगे, 8 एक बिन्दु जो सिन्धु बन गया, 9. यह देश नहीं, देवालय है, 10 आलोकधन्वा, 11 सिन्धु शार्दूल दाहिर सेन (उपन्यास), 12 राम चालीसा। |
| पाण्डुलिपि | | युगपुरुष रावण (उपन्यास), राणा सांगा (काव्य) |
| भाषा ज्ञान | . | हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, बगला, असमी, उडिया, गुजराती |
| रुचियाँ | : | शिक्षा विस्तार एव समाज सेवा |
| विशेष पुरस्कार | · | 1 गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' पुरस्कार<br>2 महाराणा फाउण्डेशन द्वारा<br>3. हिन्दी सस्थान, उ० प्र०<br>4 सुरेन्द्र संगीत पुरस्कार (बगला में)<br>5 अमेरिकन बायोग्राफिकल सोसाइटी द्वारा मैन ऑफ दि इयर<br>6. जागृति सस्थान मुजफ्फरपुर द्वारा 2002 का सर्वश्रेष्ठ सृजन पुरस्कार<br>7 उन्नाव, कानपुर और कलकत्ता की कई सस्थाओं द्वारा सम्मानित<br>8 बिहार (गज सिह द्वारा सम्मानित) |

------

डा० चन्द्रदेव सिंह ने, "महाराणा का पत्र" नामक कृति की भूमिका मे लिखा है कि, उपन्यास सम्राट मु० प्रेमचन्द ने यही कहा है कि इतिहास नामों को छोड़कर अधिकांश गलत होता है और उपन्यास नामों को छोड़कर अधिकांश सही। उपन्यास अथवा साहित्य का सत्य, मानव मन का, मानव स्वभाव का सत्य होता है। इतिहास तो प्रायः लिखवाये गये हैं अथवा उद्देश्य विशेष से प्रेरित हो लिखवाये गये हैं।

महाराणा का पत्र का ऐतिहासिक सत्य खोजने में डा० अरुण कुमार अवस्थी को मेवाड़, हल्दी घाटी व रणथम्भौर में जान जोखिम में डालनी पड़ी है किन्तु सत्यान्वेषी डा० साहब खोज ही लाये, "पटकूँ मूँछा पाण, कै पटकूँ निज तन करद/दीजैलिख दीवान, इन दो महली बात इक। उपरोक्त पंक्तियों में कवि पृथ्वीराज राठौर राणा से एक प्रश्न में शतशत प्रश्न पूछे हैं और उन शत-शत प्रश्नों का राजा ने दू टूक एक जवाब भेज दिया जिसने भारत का इतिहास ही नहीं भूगोल भी बदलने से बचा लिया।

तुरुक कहासी मुख पतो, इण तनसूँ इकलिंग।
ऊगै जाही ऊगसौ, प्राची बीच पतंग।

डा० अरुण कुमार अवस्थी की प्रबन्धरचना महाराजा के पत्र राष्ट्रीय अस्मिता का गौरव गायन ही नहीं भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत भी है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

तुम दो मूछों पर ताव सामने अकबर के,
मैं कभी उसे सम्राट नहीं कह सकता हूँ।
इस मात्र भूमि की स्वतंत्रता के लिये बीर,
सिर पर भालों के लाख बार सह सकता हूँ।
जब तक चलती है साँस, न प्रण से डिग सकता
जय इक लिंग के साथ देश की बोलूँगा।
विश्वास रखो मै माँ के बन्धन खोलूँगा,
तलवार शत्रु के शीश सर्वदा तोलूँगा

## ग़ज़ल

आज तक तनहाइयों से इस कदर नाता रहा।
होती क्या तनहाई यह अहसास ही जाता रहा।।
हम उमीदों की गठरिया रात भर ढोते रहे।
इस तरह अपने यहाँ ताउम्र जगराता रहा।।
खोज में इंसान की भटका किए हम सर्वदा।
पर हमारे द्वार हर इक बन खुदा आता रहा।।
यार खुशियों में हमारी हर कोई शामिल हुआ।
किन्तु अश्कों से जमाना खूब घबड़ाता रहा।।
लाश ढोते रह गए हम मान्यताओं की सदा।
यह जूनूं बस सिरफिरों में नाम गिनवाता रहा।।
बेखुदी में पड़के हमने दी मिटा अपनी खुदी।
बस यही संताप हमको रात दिन खाता रहा।।



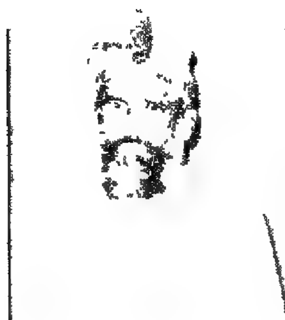
## ग़ज़ल

तिनके हवा के रुख से अब मीर बन गए हैं।
शायद इसीलिए हम गम्भीर बन गए हैं।।
दिल की जमीं पे लाखों अरमान दफ्न करके।
चलती मज़ार की हम तसवीर बन गए हैं।।
सब द्वार पर हमारे मुँह खोलकर खड़े यों।
जैसे हमीं ही स्वाती का नीर बन गए हैं।।
सबके बदन को ढकने के लिए जहाँ मे
बस द्रौपदी का केवल हम चीर बन गए हैं।।
इतना सितम है ढाया हमने स्वयं के ऊपर।
अब तो सितमगरों के हम पीर बन गए हैं।।

तासीर नापने में सारे जहाँ की साथी।
लगता है हम स्वय ही तासीर बन गए हैं।।
सबकी तृषा मिटाकर खुद रह गए हैं प्यासे।
सूखी हुई नदी के हम नीर बन गए हैं।



1. शान्त रूप पट पीत उर, सीस मुकुट धनु हाथ।
अरुण नयन प्रतिपल बसो, सीय सहित रघुनाथ।।
2 परिभाषा आदर्श की, तुम हो केवल राम।
पुरुषोत्तम अर्पित तुम्हें, श्रद्धा सहित प्रणाम।
3. माधव मदन मुरारि जय, मोहन माखन चोर।
मुख शशि शोभा हित बने, मेरे नयन चकोर।।
4 जयति रास लीला निपुण, बंशीधर छवि धाम।
कुँवर कन्हैय्या नन्द के, मीरा के घनश्याम।।
5. राम श्याम दोऊ एक हैं, रूप रंग तिल रेख।
इनके नयन गभीर हैं, उनके चपल विशेष।।
6. तप बल, अपबल, ज्ञानबल, सभी हुये कमजोर।
घोर सिफारिश का यहाँ, पग पग पर है जोर।।
7 सम्मानित है मंथरा, हुये जयन्त महान।
चरागाह ही बन गया, पूरा हिन्दुस्तान।।
8 चंदा बेचे चाँदनी, अमा बनी बरियार।
सूरज भी अब कर रहा, किरणों का व्यापार।।
9 नाग नाथ कर किया था, तुमने उसे अधीन।
किन्तु बजाते आज हम, समझौते की बीन।।
10. पशु चारा में कर रहे, गोलमाल गोपाल।
लल्लू पजू तक यहाँ करते खूब कमाल



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | | **डॉ० अमान उल्ला "अंजुम"** |
| उम्र | . | 50 साल |
| पिता | : | श्री सुलेमान खाँ |
| जन्म स्थली | | कायमपुर, चमियानी |
| योग्यता | | बी०यू०एम०एस० |
| व्यवसाय | . | चिकित्सक |
| पत्र व्यवहार | : | पो० खीरी, रायबरेली। |

# गज़ल

मरना कमाल है न जीना कमाल है।
मर जाइये तो बाद में जीना कमाल है।।
इस दौर मे कमाल अब कोई बात नहीं।
बस आदमी को आदमी मिलना कमाल है।।
खुशबू जमालो हुस्न सभी गैर के लिये।
फूलों की तरह जिंदगी जीना कमाल है।।
आसान है बुलन्द मुकामात को पाना।
लेकिन बलन्दियों पर ठहरना कमाल है।।
खा-खा के ठोकरों को संभलना नहीं कमाल।
इन ठोकरों को जहन में रखना कमाल है।।
चेहरों पर जब हो झूठ की सच्चाइयाँ सजी।
ऐसे में आइने को चटकना कमाल है।।
जब रात पर अंधेरों ने कर रखा हो कब्जा।
ऐसे में बिजलियों का कड़कना कमाल है।।
मेरी नजर में शायरी कोई नहीं कमाल।
गैरों के दर्द शेर में भरना कमाल है।।
शोहरत के भूखे लोगों को मालूम ये नहीं।
गुमनामियों के शहर में रहना कमाल है।।
आँखों के रहते देखते रहना नहीं कमाल।
आँखें गवां के देखते रहना कमाल है।।
खुश हो के यूँ हो तो हँसते हैं दुनिया में बहुत लोग।
दारों रसन के तख्त पे हसना कमाल है।।



शाम होते सभी लोग घर जायेंगे।
फिक्र यह है कि बेघर किधर जायेंगे।।
झुग्गियों में न आया करो कार से।
हम गरीबों के चेहरे उतर जायेंगे।।

जिदगी फूलो की चन्द लम्हे सही।
सारा माहौल फूलों से भर जायेगा।।
जंग करने का आता है जिनको हुनर।
उनके एक दिन मुकद्दर सवर जायेंगे।।
कैदों पाबदियाँ हम पे चलती नहीं।
खुशबुओं की तरह हम बिखर जायेंगे।।
हौसला जिन परिन्दों मे उड़ने का है।
उनके पर देख लेना कतर जायेंगे।।
हमसे उलझे तो मसनद पलट जायेगी।
वक्त आने पर हम काम कर जायेंगे।।
आग नफरत की यूं ही जो बढ़ती रही।
आसमा पर परिन्दे भी मर जायेंगे।।
मौके-मौके पे झुकना जरा सीख लो।
जितने तूफाँ हैं सर से गुजर जायेंगे।।
दिन में तारे नजर आपको आयेंगे।
आप कुर्सी से जिस दिन उतर जायेंगे।।
दागदार इतना दामन हुजूर आपका।
अब यह दामन छिपाकर किधर जायेंगे।।



जिस आग से दिल जलता है मेरा, वह आग बुझाना मुश्किल है।
जिस दर्द से आहें भरता हूँ, वह दर्द बताना मुश्किल है।।
मत छेड़िये उसका जिक्रे, जफा मजबूर न करिये इस दरजा।
कहिये तो जला दूं दिल अपना खल उसके जलना मुश्किल है।।
दामन पे लगे रहने दीजिये क्यो आप परेशा होते हैं।
यह मेरे लहू के धब्बे हैं अब इनको छुड़ाना मुश्किल है।।
हम नस्ल हैं हीर और रांझे की, और इश्क हमारा मजहब है।
नफरत से कहो इस मजहब को दुनिया से मिटाना मुश्किल है।
बच सकती है कस्ती तूफाँ से कस्ती हो अगर तूफानों में

खुद कस्ती में जब तूफां हो तो कस्ती को बचाना मुश्किल है
जो जख्म लगे है सीने पर उन जख्मों का किस्सा आसां है
और पीठ के जख्मों का किस्सा अफसोस बताना मुश्किल है।
तुम लाख कहो गद्दारे वतन इस मुल्क से हम को उलफत है।
खुशबू का जो फूल का रिश्ता है वह रिश्ता मिटाना मुश्किल है।



परवर दिगार का बड़ा अहसान मानिये,
घर खैरियत से आप अगर लौट आइये।।
रहजन की शक्ल मिलती है रहबर से हूबहू
पहचानने लगो तो इन्हें अटपटाइये।
इन मसनवी चिरागों में अब कोई दम नहीं
दुनिया में रौशनी के लिये दिल जलाइये।
अंधों को ये मिला है हकूमत से इजने आम
जो आंख वाले हैं उन्हें रास्ता दिखाइये।
साजिश में दोस्तों के भी मिलने लगे हैं हाथ।
अपनो को भी गले से संभलकर लगाइये।
काटां चुभा हो पांव में पीछे बधें हो हाथ
चलने का हुक्म भी हो तो फिर मुस्कराइये।
चिगारियों से बांग का कहते सुना गया
मौसम बहार का है चमन फिर जलाइये।
करते हैं बन्द कमरों में बातें सियासी लोग
ठण्डा पड़ा है शहर इसे फिर जलाइये।
कायम अमन जमाने में होगा कुछ इस तरह
शायर को बज्म में लाके दूल्हा बनाइये।
अपने पड़ोसी की भी खबर लीजिये जनाब
फिर कहकहों की गूंज में खुशियां मनाइये।



एक इसान का इन्सा पे इनायत करना
इससे बढ़कर नहीं दुनिया में इबादत करना।
जिन अजानों से तरसते हो मोहब्बत के सुतून
उन अजानो के नकलमात समाअत करना।
उनके हाथों में है कौमो की इयामत का निज़ाम
जिनको आती नहीं एक सफ की इमामत करना।
भीड नफरत की लगी हो तो उधर मत जाना
प्यार की बज़्म में जाना तो सदारत करना।
बुजदिली जो भी सराफत को समझ लेते है
ऐसे लोगों से है बेकार सराफत करना।
जिसकी गज़लों में हो सहबाऐ मोहब्बत के सुरूर
ऐसे शायर की जमाने मे हिमायत करना।
पहले सोने की तरह तप के निखरिये तो हुज़ूर
इतना आसा नहीं दुनिया को हिदायत करना।
आग वह इश्क की पहले तो लगा देता है
और फिर अपने ही दामन से हवा देता है
नाम लिख-लिख के मेरा मिटा देता है
यह भी अंदाजे मुहब्बत का पता देता है।
बार-बार आईना इस तरह न देखा कीजिए
आइना हुस्न को मगरूर बना देता है।
आग तो लोग लगा देते है नादानी मे
खतरा उससे है जो शोलों को हवा देता है
दर्द से आसना होना भी जरूरी है बहुत
ऐश इन्सान को एक रोज थका देता है।
कैद का दर्द यकीनन उसे आता होगा।
वह जो पिंजरों परिन्दों को उड़ा देता है।
जिसमें तूफां से उलझने की हो हिम्मत अंजूम
ऐसी कस्ती को समन्दर भी दुआ देता है।





## *जीवन परिचय*

| | | |
|---|---|---|
| नाम | . | **ओमप्रकाश जयन्त** |
| पिता | : | स्व० श्री कन्धई लाल |
| जन्म तिथि | : | 19-12-1974 |
| शिक्षा | : | एम०ए० (समाजशास्त्र) |
| पत्र व्यवहार | . | ग्रा० पो० बारा, हैदरगढ़, जिला-बाराबंकी। |
| प्रकाशित साहित्य | : | 1. बाल कथा गीत |
| | | 2. नखत अवधी काव्य संकलन में योगदान |
| | | 3 बैसवारा विशेषांक का सम्पादन |
| | | 4. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित |
| यन्यस्थ | : | हास्य कहानियों की संकलन काव्य कथायें |
| सम्मान | : | दिनांक 5-9-1994 को महामहिम डॉ० शंकर दयाल शर्मा, राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा 1993 का राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार । |

# जब गयन सारि की ससुरारी

यक दिवस निमत्रण मां पहुँचेन बजि रहे राति के जब बाइस।
जब घुसेन गाव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

हम खुशी भयन-न्योता आवा
सारे केरी ससुरारी ते।
सुनिकै मन भवा बहुत गलगल
बतलाबै सरहज सारी ते।
फिरि चटपट कीन तयारी हम,
जउने दिन का न्योता पावा
मुलु चलतै छीक भई
गुस्सा हमका बहुतै आवा।

इ ढोंग न माना जब हम तौ, मेहरेवा बहुतै समझाइस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

जब चलेन झबांक से तब बोली,
अम्मा ते भेट भांट कीन्हेव।
ननकई बिटेवा के पहुँचत।
धीरे ते चुम्मा लै लीन्हेव।
लेकिन जब गयन गाव बाहर
सियरउना रस्ता दिहिस कांटि
मनमानि निहारा इधर उधर
गज भर कै छाती मोरि फांटि।

असगुन पर असगुन होत देखि झक्खेन का है गड़बड़ साइत।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

फिरि राम नांव लै सौ फयारा,
अपनी सैकिल पर बैठि लीन।

मजिल पर पहुचै की खातिर,
जल्दी रफ्तार बढ़ाय दीन।
जब लॉघि गयन हम चारि कोस,
तब तौ धड़ाम कै चौकाई।
जब जाना सैकिल भष्ट भई,
आंखिन आगे ऑधी छाई।

देखि कै अकेले मा हमका, जेठ कै दुपहरी मुंह बाईस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।
बहु जौन इलाका ऊसर कै
है तीन कोस तक गांव नहीं।
जौ परौ बीच ऊसर मइहां
तौ ऐसी वइसी छांव नहीं।
कउनिव विधि ऊसर पार कीन,
हम घिसटि घिसटि कै भुलभुलिमा
घर ते बाबू वनि चलेन रहै मुलु
भएन बिलौटा ऊसर मा।

फिर पांच बजे एक सैकिल वाला हमका धीरज बंधवाइस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।
मुलु भष्ट बनावत रहा जबै,
बहि केर सुलेसन खतम भई।
ज्यों लिखत बेर किसमत विधि कै
लेखनी बीच मा टूट गई।
कउनिव विधि–वहिका ठोकि ठांकि
टारिसि हमका और कहिसि जाव,
पैसन के कउनिव बात नहिन।
रुपया हमका चाही सवाव।

कुछ कम ज्यादा कै बात कीन तौ लौडा हमका हड़काइस।
जब घुसेन गाव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

फिरि जैसन थोरी दूरि गएन
दबिगै पहिया कम हवा हुई।
अइसी वइसी ताकै लागेन
गति सांप छछूदर केरि भई।।
ना थोरिउ दूरि चलै पावा,
वह आपन रोउना रोय रही।
द्याखा तो सैकिल कोरि हवा
सुर सुर्र सुर्र कै जाय रही।

गुस्सा मा वहिका पटकि दीन कहि काहे हमका दिक्काइस
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

बहिसमय सुरजवा अथै रहे
औ भुइया तीन कोस बाकी
हम जैसे तैसे पारकीन
न करम बचे एकौ बाकी
जब घुसेन गांव मा जिव धड़का
चहु ओर देखि कै सनानन्न
तबहिन घटी घड़ियाल दिहिस
दस टन्न टना टन टन्न टन्न।

हम चुप्पे-चुप्पे जात रहेन तबहिन कुकरौना हउहाइस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

हम दुरि दुरि दुरि करि रहेन मुला
वह हमरे पाए काटि लिहिसि
मानौ पहुनौती कै हमारि
वह जनम निसानी डारि दिहिस



सुनि बोल चाभरि सब जागि परे
मिट्टी का तेल मंगावा गा।
फिरि सात पांच कुइया दरपन
हमते जबरन देखवावा गा।

जब घर पहुचेन तब सार मोर अप्रैल फूल कहि ठट्ठाइस।
जब घुसेन गाव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

उइ कहिन अरे जीजा तुमका
तकलीफ मिली गलती हमारि।
मुलु तुमहूं तौ एकदम्मै से
हम पंचन का दीन्हेव बिसारि।
यह सुनतै क्रोध बहुत आवा,
कुछ सोचि तुरत दबाय लीन
और कहा कौन तकलीफ मिली
माया सारेन कै जानि लीन।

फिरि टरिगै बात हसउवन मा हम सोची कैसा रखड़ाइस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।

फिरि भवा मोर चुप्पे उठि कै
हम अपने घर का सिधियावा।
औ जीवन की रछा खातिर
चौदह इन्जेक्शन लगवावा
यहि भांति पेटु छलनी होइगा,
कुकरैल नहावा मनमारे।
हमरे मानौ सब जने सुनौ
न जापौ सारे के सारे।

अप्रैल फूल के चक्कर मां देख्यो जयन्त का भरवाइस।
जब घुसेन गांव के भीतर तौ, बउरानि कुकुरिया धै खाइस।।



# घर रोजै झंझटु लाग रहै

हम नीकि जानि कीन्हा विवाहु
खुशहाल रहौ घर भरा रहै।
सब काम बनी बढ़िया बढ़िया
परिवार हमारा हरा रहै।
मुलु लच्छन नीकि नहीं निकरे
तन सुन्दर मनु हम न दुयाखा।
और थोरेन दिन मा जानि गयन
उइ नारि नहीं है सपन्याखा।
हम गरिया की मझवानी का ना बतलाइस जे दाग रहै।
बाहेर ते जौ घर का आवौं
उनका मुंह फूला रोज रहै।
घिउ गुरु ते पूजे रहौ तवौ,
कूला अनुकूला रोज रहै।
हम चुप्पी साधे परे रही
कुछ बोलौ तौ महाराय जायं।
जौ हमते मिलै कोऊ आवै।
हमते पहले बतलाय जायं।
हम बरफ समान रही ठडे, उइ कंडा केरी आगि रहै।
उइ रोज खड़ंजा पर देखै,
दुई तीन बजे मास्टर देखाय।
हम पाच बजे तक ना पहुँची,
यहि ते ज्यादा रिसियाय जायं।
हरहा पालै कै बड़ी सौख
चारा जौ दिये मरै नानी।
जानौ कुछ फरमाइस होई,

जौ कहा जरा सा मुसकानी।
हमारी खातिर तौ यहै बहुत जैसे फागुन के फाग अहै।
जौ गुस्सा मा दरपन द्याखो
तौ सीसौ के दिल धड़कि जायं।
जौ कहूँ राति मा खासि परै
तौ ट्वाला वाले जागि जाय।
जौ कहूं प्यार आवै उनके तौ,
कुत्तौ कै मुंह चाटै लागै।
जौ और बढ़े थ्वारा दुलार
तौ दांतन ते काटै लागै।
सुलगै जयन्त भीतर भीतर जैसे सुलगत बगदाद रहे।





## जीवन परिचय

| | |
|---|---|
| नाम | काशीशंकर अवस्थी |
| पिता | स्व० गंगा सहाय अवस्थी |
| जन्म स्थान | सुमेरपुर, जिला-उन्नाव |
| शिक्षा | एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., शास्त्री |
| अन्य कृतियाँ | आरक्षण शतक, उद्धव संदेश, |
| | 1 वीर अभिमन्यु |
| | 2 रसनामृत (प्रकाशाधीन) |

# कवित्त

आनन्द के कन्द जगबंद देवकी के नद,
नयन नीर तनमन पीर छा गयी।
लीला के बिहारी बनवारी सब भूलि गये,
पियरानी राधा साँस साँस मे समा गयीं।
बीथिन को ब्रज को नवेलिन को बेलिन को,
सोचि-सोचि मति ब्रजपति कै हिरा गयी।
कान्ह जू की ऑखिया बहन लागी झर झर,
मानो निशिरानी जल मुकता बिछा गयी ।।१।।

रथ के चलत ऊधौ हौं जु हेरि दीखो हुतौ,
चित्र सी खचित ब्रजनारी महतारी थीं।
सूखे दूखे बदन श्रवति नैन जल धार,
ठगी सी ठगौरी सब विरह विदारी थी।।
अंग थहराने पांव ह्वै गये पराने मानो
जल ते विहीन विकलानी बारिचारी थी।
उठै गिरि परै हाथ मलि-मलि पछिताहिं,
मानौं ब्रज बेलि पेलि विधि दव डारी थी ।। २।।

जब ते हमारे कान्ह मथुरा सिधारे,
बजे विरह नगारे ब्रज ज्वाल बरसत है।
धधकत धरनि धरन नहि चाहैं छॉह,
तरनि तनूजा तीर बिरह बरत हैं।।
ऊधौ अध सुलगी-सुलगि बाकी बातन में,
विरह के आतप मे चैन उपजत है।
पर बीच-बीच में तिहारो ब्रह्म सुख कीच,
लागै ज्यों तताई बीच लोन चुपरत है ।।३।।



वाकी बॉकी भौंहे मन मोहनी चितौनि,
मृगन से नैन फेरि उर में समाइगो।
वाके उचकाने से, सकाने से उरज ऊधौ,
कदली सो जध देखि मन ठराइगो।।
मुख तिल सो हैं जैसे पंकज के बीच बसो,
मधुकर छोना है दिठौना सो छपाइगो।
उधो उर वसी राधिका को दुःख सोचिपोचि,
आजु तेरो कान्ह विन मोलहि निकाइगो।।

राधा मृग लोचनि के विछुरे भई जो गति,
कहन चहै न कहि पावै कान्ह तेरो है।
नेह परिपूरित दशा की शुद्ध सुचि सुधि,
दिन छिन छाय घन सम मन घेरो है।।
दीप की शिखा सी तन दुति चमकावै हिय
पल पल बढ़ि नेह करत अधेरो है।
विरह के तम उबरैं न छन हूँ को मन,
आजु अकुलात बार-बार मन मेरो है।।





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | कीर्ति अवस्थी |
| जन्म | : | 26 अक्टूबर 1951, ट |
| शिक्षा | : | एम०ए० (हिन्दी साहित |
| भाषा | : | हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, |
| लेखन | : | कविता, कहानी, दूरदर्शन<br>हिन्दुस्तान से जुड़ी रहीं |
| रुचियाँ | : | ड्राइंग, पेन्टिंग्स, कला |
| पिता | : | शिव बसन्तलाल मिश्र |
| पुत्र | : | अरविन्द , अनुपम |
| ससुराल | : | सुमेरपुर, जिला-उन्नाव |
| पति | : | स्व० श्रीकान्त अवस्थी |

# स्मृति

मन पर जल मे भींगी
जल छवि सी 'छाप'
इसे ही कहते हैं स्मृति।
स्नेह के, घृणा के धागों से
बुनी जाती है कुछ यादें-
जो चादर सी ढक लेती है
जीवन के न जाने कितने पल कितने क्षण,
जो अभिभूत करती हैं कभी
तो कभी इसी चादर तले
बीता हुआ कल, जीवित हो उठता है आज में।
इसी 'चादर' को हम नाम देते हैं स्मृति का।
देखा जाये तो स्मृति ही तो है वो नींव
जिस पर टिकते हैं रिश्ते,
ये स्मृति ही है,
जो बार-बार दिलाती है स्मृति
कि हम 'हम' हैं।
हमारे अहं, हमारे अस्तित्व की
आधारशिला है 'स्मृति'।



# माँएं

अंधेरे के पार, उजाला बनकर खड़ी है जो वो माँ है।
अथाह विश्वास और असीम प्यार की गहराती नदियाँ,
फूटते चश्मों सी रास्ता बनाती हुई,
छोटी बड़ी हमारी इच्छाओं के लिये
फटे आदर्शों को ओढ़, ता उम्र त्रासदी भोगती
पर खंडित न होती हुई।
अंधेरे को पी कर रोशनी बाँटती रही।
खेतों में पीले फूलो सी खिली,
कोल्हू में पिसी और धार बन गई स्निग्धता की
उनका कोमल स्पर्श बीन लेता है,
सारे तनाव को, दर्द और व्यग्रता को
उनकी हंसी झिलमिलाती है।
रात मे छिटकी चांदनी सी।
पर उनकी पलकों पर भोर विह्वल है, सूखती ही नहीं।
उनका जीवन एक लम्बी प्रार्थना है।
सत्य की तरह निर्मल, सपनों सा निष्पाप,
स्फटिक सा पारदर्शी
सुबह की धूप सा आत्मीय।
फिर क्यों अंधेरे में कैद हैं वो ?
ठूँठ की तरह सूखी और उदास है वो।
जंगल में उतरी शाम सी, निस्तब्ध और खामोश,
उनकी पुनःसृष्टि हैं हम,
हमारे लिये चिन्तित और उदास है वो।



# लहर

लहर हूँ मैं,
विशाल सागर के गहरे अन्तस को
उद्वेलित करती मैं, प्रकंपित करती मैं,
मुझसे ही तो आते हैं,
सागर में ज्वार भाटे।
पर कहाँ है मेरा अस्तित्व ?
उद्वेलित करती मैं,
इस सागर को महान दर्शाती मैं,
मूंगे मोती सीपियों का अम्बार लगाती मैं।
पर कल जब उठेंगी नई लहरें
जा बिछूंगी मैं रेत के बर्फीले नीरव किनारों पर
महाकाल बनायेगा समाधि मेरी
बालू के ढहते कगारों पर।
रौंदता हुआ कोई निकल जायेगा मुझे।
खो जाँऊगी मैं कहीं सागर किनारे,
सुनूँगी किलोलें नई लहरों की,
पर शायद यही है जीवन
कितना क्षण भंगुर-कितना अद्भुत
पर कितना सार्थक,
हाँ ! लहर हूँ मैं ... ...



# वापसी

मेरे सीने में जमा है
बर्फ की छोटी बड़ी चट्टाने
मेघों के कई--कई टुकडे।
मुझे इन्तजार है ......
इनके पिघलने और बरसने का,
ताकि उजला धुला-
हो सके मेरे मन का आकाश।
मेघो के पीछे पथराई पड़ी है।
जख्म यादों की नदी
दर्द में डूबी शापग्रस्त नदी।
यही कहीं गुम है मेरी पहचान
मेरे जिन्दा होने के निशान।
इसीलिए मुझे इन्तजार है
घोर बारिश का, जिसकी वापसी
मेरी खोई पहचान की वापसी होगी।



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **कुंज बिहारी यादव** |
| पिता | : | श्री नन्द किशोर यादव |
| माता | : | श्रीमती गंगा देवी |
| भाई-बहन | | वृन्दावन बिहारी लाल यादव (अग्रज)<br>श्रीमती ऊषा देवी (बहन) |
| जन्म | · | 01 दिसम्बर 1967 |
| शिक्षा | · | एम०ए० (हिन्दी), एल-एल.बी., बी.एड. |
| पता | | ग्राम- टिकुरीमऊ, पोस्ट-रूझेई जिला उन्नाव |
| रुचि | | पत्रकारिता एव स्वतत्र लेखन |
| सम्प्रति | · | प्रबन्धक सिद्धार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकुरीमऊ, उन्नाव। |

# चूहा

मैं चूहा लघुता का प्रतीक, लघुता में हर्षित रहता हूँ।
अपमान व्यंग्य और तिरस्कार को, हंसते-हंसते सहता हूँ।।
वाहन गणेश का होकर भी, आया ना मुझमे अहंभाव,
प्रभुता पाकर होना मदान्ध, ऐसा न रहा मेरा स्वभाव।
धावक पर घोर निशाचर हूँ, दिन में नानी मर जाती है
मानव की आहट पाकर के, दिल की धडकन बढ़ जाती है।
धावा अमीर के घर बोलैं, हम मालपुआ के ग्राहक हैं,
हम कार्ल मार्क्स के चेले हैं हम समता के संवाहक हैं।
अपनी फुर्ती चतुराई से, सब बिगड़े काम बनाता हूँ।
मनुजों की तरह कृतघ्न बनूं, यह भाव न मन में लाता हूँ।।
उपकारी के ऋण का बदला जीवन में सदा चुकाया है।
केवल कपोत ही नहीं, कैद केहरि आजाद कराया है।
है क्षमा शीलता गांधी सी संसार सीख ले सकता है।
मुझको खाने वाला भुजंग, मेरे ही घर में रहता है।।
पर मानव तो निर्दयता की कायम मिसाल कर देता है।
विषधर को देता दूध किन्तु वह मुझे गरल दे देता है।।
पर मत भूले यह मनुज जाति, मैं जहर बुझाया कीला हूँ।
मैं शुद्ध नक्सली कामरेड, विषधर से भी जहरीला हूँ।।
विषधर मरने पर मूल्यहीन, कुछ अहित नहीं कर सकता है।
मैं मरूँ तो फैले प्लेग रोग, जो विश्व हजम कर सकता है।।



# प्रतिबिम्ब निहारै

कन्दुक खेलैं यशोदा के नंदन, राधा खड़ी ढिंग दीठि न डारैं।
खीझि कै राधिकैं गेंद उठाइ, लियो कर में अरु देन नकारै।।
गेंद छिनावत नन्द लला, वृषभानु किशोरिहूँ हाथ पछारै।
बहिंया कटि बीच में डारे खड़ें, दोउ आँखन माँ प्रतिबिम्ब निहारै।।१।।

बांह छुड़ाइ कै चन्द्र मुखी, निज भौन गयी कहि मातु पुकारै।
कान्ह खड़े यमुना तट पै, उर पीर बढ़ी कत धीरज धारै।।
साझ भयी भयो चन्द्रप्रकाश, मनौं खुद कामिनी रूप पसारै।
दीठि गयी जमुना जल में, जल में पिय को प्रतिबिम्ब निहारै।।२।।

कच की लट खोलि संवारति बैठिकै, नैननु प्रीति को अंजनु डारै।
पांय महावर नाउनि देति, ज्यौं नीरज पे खुद नीरज वारै।।
करि बांह गले अरु नाक औ कान में, अंगन-अगन भूषण धारै।
खंजनि नैननि रीझे खुदै, मन मोद भरी प्रतिबिम्ब निहारै।।३।।

चोरी छिछोरी पे ध्यान गयो नहिं, माखु न माना चरायो जो गैया।
तन पै मन औ मन पै तन वारि कै, मोहन की नित लीन बलैया।
कुवरी बंसुरी तक पै तुम रीझि, सतायो बड़ा हे यशोदा के छैया।।
बदला तुम ते सब न्याब चुका, तुम राधा बन्यो हम हवाब कन्हैया।।४।।



# लेखनी

हे सुघरि लेखनी तुमको भी
उत्सर्ग बहुत करना होगा।
मानवता के जागरण हेतु,
साहित्य नया गढ़ना होगा।।

नारी को अली कली कहकर,
कामी भौंरे रस लूट चुके।
बेबस अबला कौमार्य लुटा
सिसके ऐसे दिन बीत चुके।

अब अधर कमल पर नहीं कोई,
आकर भँवरा मड़रायेगा।
यदि भ्रमर करेगा दुःसाहस,
जिन्दा दफनाया जायेगा।।

नारी सौन्दर्य विवेचन से
लेखनी तुम्हें बचना होगा।
मानवता के जागरण हेतु,
साहित्य नया गढ़ना होगा।।

अब रीतिकाल के दिन बीते,
वह भक्ति काल भी नहीं रहा।
मन्दिर मस्जिद के झगड़े में,
है रक्त मनुज का बहुत बहा।।

अब चारण काल समाप्त हुआ,
कविता को खुद जीना होगा।
घूरू किसान की कुटिया की
हर व्यथा कथा लिखना होगा।।

इन छायावादी गीतों से,
सब काम बिगड़ता जायगा।
नारी के नूपुर की ध्वनि में,
इन्सान जकड़ता जायेगा।।

जब तक रामू-श्यामू बुधई,
कल्लू के लडके भूखे हैं।
यौवन मे छिपा बुढ़ापा आ
सुखिया के चेहरे सूखे हैं।।

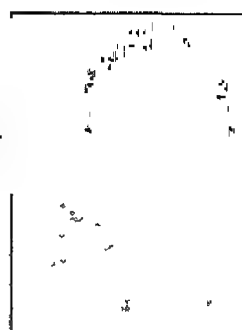
तब तक रोटी की विषय-वस्तु
पर ही कविता लिखना होगा।
इन साधन हीन गरीबों की
हर व्यथा-कथा सुनना होगा।।

कविता की यही कसौटी है
खुद जग का दर्द जिया जाये।
औरों को अपनी खुशी बांट
शिव बनकर गरल पिया जाये।।

जो काम निराशावादी है,
कवि निष्कामी बन करता है।
कवि के जीवन को मत पूछो,
नित जीता है नित मरता है।।

हे सुघरि लेखनी तुमको भी
निष्काम कर्म करना होगा।
मानवता के जागरण हेतु,
साहित्य नया गढ़ना होगा।।





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | | **डॉ० गणेश नारायण शुक्ल** |
| ग्राम व पोस्ट | . | बिहार, जनपद–उन्नाव |
| आत्मज | : | पं० शिवकण्ठ शुक्ल |
| माता | : | श्रीमती जयदेवी |
| शिक्षा | : | एम.ए.(त्रय) एम.एस-सी. पी.एच्-डी., डी.लिट् शोधरत। |
| प्रकाशित कृतियाँ | : | 1 आस्था नहीं मिटी (काव्य संग्रह)<br>2 धूप में कुछ देर और (काव्य संग्रह)<br>3 शम्भूनाथ की अज्ञात रचनायें, बैस वंशावली और नवरस (शोध)<br>4 श्री पीताम्बरा (स्तुति काव्य)<br>5 मकान कभी घर थे (काव्य संग्रह) |
| यन्त्रस्थ | | 1 निराला कृत राम की शक्ति पूजा का भाष्य।<br>2 बीज मन्त्रों का वैज्ञानिक विवेचन। |
| अप्रकाशित | . | 1 शम्भूनाथ मिश्र और उनका काव्य (शोध प्रबन्ध)<br>2 तीर्थराज कृत समर सार (व्याख्या/टीका)<br>3 हिन्दी के ज्योतिष काव्य (शोध)<br>4 नखशिख काव्य परम्परा में सुखदेव मिश्र का शिख नख (समालोचना)<br>5. शम्भूनाथ मिश्र ग्रन्थावली (दो खण्डों में)<br>6 नवरात्र निर्णय (निबध संग्रह) |

# भर हथेली छन्द

प्रेम, प्राणायाम, चदन
आचमन भर गध,
मेरे हिस्से में पड़े हैं-
भर हथेली छन्द।
चन्द्रमा की चोर चितवन
चांदनी का रूप
सब हुये नीलाम पाकर
एक चुटकी धूप,
शव्द में भी हो न पाये
आंख के अनुवाद
सुना मारा महाभारत
रही गीता याद।
सूलियों पर सेज गिरधर की
लगन स्वच्छन्द
मेरे हिस्से पड़े, मीरा-श्याम के सम्बन्ध।
गोद से चिपका हुआ शीशा
हुई कसमें
वायदें ज्यों कर्ज में
डूबी हुई रस्में।
सूप जैसा ही पछोरा
समय ने सम्पर्क
आँख से था कान का
वस चार अंगुल फर्क।
प्यास गागर भर
छिगुनिया जल गदोरिया बद
मेरे हिस्से में पड़े हैं,
अनगिनत अनुबंध।

# बापू के नाम

वहुत दिनों से देख रहा हूँ
लेखा-जोखा लेख रहा हूँ
आज तुम्हे गणतंत्र दिवस पर
पहली चिट्ठी भेज रहा हूँ।

सबसे पहले तुम्हें प्रणाम।
रघुपति राघव राजा राम।

आगे समाचार लिखता हूँ
मैं भारत माँ की जनता हूँ
रामराज्य का स्वप्न देखकर
रामराम कह दिन भरता हू।

नीदें सारी हुई हराम।
रघुपति राघव राजा राम।

रोजी रोटी नही मकान
भूखों ही मर रहे किसान
शक्कर तेल नहीं मिलता है
घी को तरस रहे भगवान।

नेता निकले नमक हराम।
रघुपति राघव राजा राम।

बापू तेरे देश में
चोर, पुलिस के वेष में
लात और घूंसे चलते हैं
संसद के परिवेश में।

वोट हो रहे है नीलाम
रघुपति राघव राजा राम।

जो जिसको पा जाता है,
वह उसको खा जाता है,
तुमसे ही कहता हूँ बापू,
देश धरम का नाता है।

थोड़े मे लो समझ तमाम
रघुपति राघव राजा राम।

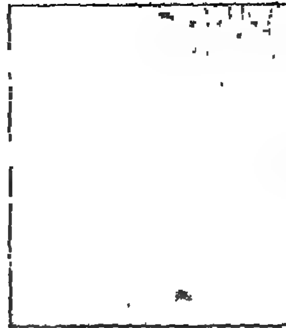
# मकान कभी घर थे

छत और दीवारों के अनजान से घेरे हैं
मकान कभी घर थे अब रैन बसेरे हैं।
कंधे पे हवाओं के बैठे हुये है रिश्ते
मौसम से बदलते हुये विश्वास के फेरे हैं।
बाहर बरामदे के कोने में बुढ़ापा है
आँगन में फुसफुसाहट कमरे में लुटेरे हैं।
क्या कह दिया हवा ने कानों में इस शहर के
सूझी हुयी है शामें सहमें से सबेरे हैं।
माहौल एक सा है जंगल और शहर में
दोनों जगह शिखर पर कौवों के ही डेरे हैं।
आकाश में ये कैसी तारों की सियासत है,
चन्दा है गैर हाजिर सूरज में अंधेरे हैं।

# सींक का टुकड़ा

मैं
भले ही सींक का
टुकडा हूँ
सुरक्षित रखना मुझे
कौन जाने कब
कोई जयन्त
किसी सीता को चोंच मारे
तब
हड़बड़ाहट में
मैं ही
राम के हाथ लगूं
और ब्रह्मास्त्र बन जाऊँ।





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **डॉ० चन्द्रकिशोर बाजपेयी** |
| पिता | : | श्री राम प्रसाद बाजपेयी |
| स्थायी पता | : | बेहटा भवानी, उन्नाव (वर्तमान बिहार-उन्नाव) |
| जन्मतिथि | : | 31 दिसम्बर 1936 |
| योग्यता | : | एम०ए०, साहित्यरत्न |
| प्रकाशित साहित्य | : | विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में |
| अप्रकाशित साहित्य | : | घनाक्षरी, सवैया, छन्द गीत पद दोहे आदि |
| अन्य रुचियाँ | : | चिकित्सा के अतिरिक्त साहित्यिक अध्ययन एवं लेखन। |

# शिवाष्टक (छन्द)

जयभूत भावन अद्यनशावन नित्यपावन सुन्दरम्।
जटजूट गंगनिनाद कलकल सकल पाप विमोचनम्।।
छवि सघन घन नभ सदृश शोभित नित्य शुभ गिरिजा वरम्।
जयभक्त वत्सल काव्य कौशल परम हित जय शेषरम्।।
जय दिव्य भाल सुनेत लाल सु बाल इन्दु सुशोभनम्।
ध्वनि गंग मधुर मृदंग-भृंग सु अंग भस्म विभूषितम्
अति मधुर हास-विलास प्रतिपल स्वास-स्वास सदा शुभम्।
जयकाम पालक नित्य पालक भक्त पालक मंगलम्।।
जय पाप भंजन जगत रंजन देव रंजन खलदलम्।
शिव-शिवापति भवभक्तपति जय उमापति बलनिर्वलम्।
रतिपति निहता भक्त चिंता दुष्ट हता अतिबलम्।
जय भुवन भार उद्धार कर्ता कष्ट हर्ता निर्मलम्।।
जय मुण्डमाल कपाल श्रोणित भस्म अंग सु लोचनम्
जयभुज विशाल-मराल चाल सु लाल लोचन सुन्दरम्
सर अति विशाल अराल शोभित भक्त पालक मंगलम्।
जयगंगधारी शशि सँवारी सर्पहारी हर हरम्।।
जय सोमनाथ प्रवास क्षेत्रे अवतरित त्रेता युगम्।
जय मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग श्री शैल शैल व्यवस्थितम्।।
जय महाकालेश्वर नदी क्षिप्रा सुतीरे अवतरम्।
जय ओमकारेश्वर अपागा नर्मदा विच विस्तरम्।।
जय ज्योति केदारे स्वरम् मंदाकिनी तट शोभितम्।
तट नदी भीमा स्थले श्री भीमशंकर श्री करम्।।
जय ज्योतिलिंग विशेस्वरम् काशी प्रवासी हरहरम्।
जय त्रम्बिकेश्वर गौतमी तट ब्रह्मगिरि पविस्थलम्।

जय वैद्यनाथेश्वर चिता-भस्मी स्वरूपे श्री शिवम्।
नागेश्वरम् जय ज्योति लिगे द्वारिका क्षेत्रे शुभम्।।
रामेश्वरम् जय रामनाथम् सेतु बन्ध विशेम्भरम्।
घुस्मेश्वरम् धुष्माजतिम् जय मुग प्रणेता श्रीपतिम्।।
जयनील कण्ठ गिरीश गिरिजापति महेश उमापतिम्।
जय महादेव शिवेश पंचानन त्रिलोचन पशुपतिम्।
जय चन्द्रशेखर चन्द्रमाल त्रिनेत्र शम्भू श्रीपतिम्।
जय बामदेव विशम्भरम् शिव आशुतोष भयंकरम्।।



# गीत

आज प्रेयसि मौन हो तुम, कहो प्रेयसि कौन हो तुम !!
कीर नाशा नेत्र खंजन, कदलि जंघ बुद्धि सम्भ्रम
उर्वसी सी कौन हो तुम, आज प्रेयसि मौन हो तुम।।१।।

मलय नलिका, कमल कलिका, हृदय की तुम गुंज मलिका,
राधिका सी कौन हो तुम ?, आज प्रेयसि मौन हो तुम।।२।।
जान्हवी सी स्वेत रंगी, भानुजा सी स्यामलागी,
ब्रह्म पत्नी सरस्वती सी, कौन हो तुम ?
आज प्रेयसि मौन हो तुम।।३।।

प्रथम कवि की गीतिका सी,
और मनु की भीतिका सी, मेघछादित ब्योम में सखि
अरुणिमा सी कौन हो तुम ? आज प्रेयसि मौन हो तुम।।४।।

मीन की गति, काम की रति,
ईशण की अद्भुत कलाकृति, मेनका सी कौन हो तुम ?
आज प्रेयसि मौन हो तुम ५

प्रेम क्षणिका, स्वर्ण कणिका,
रूप में विद्युत्छटा सी, स्यामघन बिच कौन हो तुम ?
आज प्रेयसि मौन हो तुम।।६।।

सुरभि सुमनावलि अलौकिक, दीप की लघु लव प्रकम्पित,
शरद् सुचि शरदेन्दु की पीयूष-वर्षी, यामिनी सी कौन हो तुम ?
आज प्रेयसि मौन हो तुम।।७।।

सुरभि की शुचि ग्रंथिका सी, प्यार की पवि प्रीतिमा सी,
अपरिमेया सुरभिपुष्पी, यामिनी शुचि स्याम की सी
रातरानी कौन हो तुम ? आज प्रेयसि कौन हो तुम।।८।।



# अलगाव (सवैया)

कोकिल-कण्ठ कठोर लगै, पपिहा ध्वनि पीर बड़ी उपजावै।
प्रात की बात न नीकि लगै, अनुराग की पीर हिये उपजावै।।
फूल गुलाब को दग्ध अंगार, शृंगारहु जेठ की लू बरसावै।
हेम छुये झुलसै कर कञ्ज वियोग सरोज धुवा उपजावै।।१।।

सुधि प्रीतम की करि खीझ लगैं, सुधि वारहिं बार तहूँ पर आवै।
दिन माहि निगोड़ी है पीछे परी, निशि स्वप्न में बारहि बार जगावै।।
एकौ घरी नहि चैन मिलै, पिय बैन क्षणेक को आस जगावै।
धीरजु राखु अरी सजनी, कल की रजनी पुनि आय जगावै।।२।।

मीन को देखि ढरें द्रग नीर, चकोर को देखि जरै अस छाती।
केउ उपमान न नीको लगै, सब फीको लगै हर व्यंजन थाती।।
सिगरे जग व्यजन फीके परे, मधु मिश्रित वस्तु सदै करुआती।
पिय आवन की कल बात करै जब पायो सदेश न एकहु पाती।।३।।

जिय आवत कूपहि डूबि मरौ, मिलि जॉय किधौंजिय खोलि तरौं।
कबहूं जिय आवत आवत ही, विलखाय कै प्रीतम पाय परौं।।
फिरि जोरि कै हॉथ दृगै-दृग डारि होइ कातर यों अरदास करौं।
सब मूल हमारिहु दूरि करौ है रावरि सौंह जो मैं झगरौ।।४।।

कल रात समै पिय आये सखी, ढिग आय वहोलिन घेरि लई।
मुसकाई-रिझाई दृगै-दृग मे, अधरानन आनन केलि दई।।
मसकाय गई अगिया सिगरी, श्रम विन्दुन चूनर भीगि गई।
वहि काल के आनन्द के नद में सब देव व देविन भूलि गई।।५।।



# परिवर्तन

वह रूप अनूप सुसौरभ गंध, मिला अनुराग नहीं रहा है।
वह चाल मराल सी दृष्टि सुखजन वाणी पीयूष नहीं रहा है।
वह यौवन का लावण्यमयी अभिव्यक्ति का सत्य नहीं रहा है।
भला सौरभहीन, सुगन्धविहीन, वह मान का मान कहां रहा है।।1।।

कभी रूप अनूप को देख प्रिये, शशि क्लान्त अशान्त रहा करता था।
शीतल-मंद-सुगंध सुबात, सुसाँससों नित्य झरा करता था।
उस चाल को देख कराल सदा मन ही मन डाह किया करता था।
स्वर सुन्दर सग सने अनुराग से, कोकिल कंठ डीर करता था।।२।।

लखि मीन की प्रीति की रीति सदा मनमोर विकोर हुआ करता था
शीतल-मंद-सुगंधः समर, सदा दिन रात बहा करता था।
कभी बैठ क्षणेक को पास प्रिये अनुराग का राग गुना करता था।
कभी रूठनें पै, कभी खीझने पै, मनुहार यह मान किया करता था।।३।।



सत्तावनी क्रान्ति के पुरोध राना बेनीमाधव सिंह के समकालीन कवि श्री बच्चू लाल का वह छन्द जिसे बैसवारे में सुधीजन प्रायः दुहराते हैं।

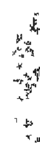
देखि अंगरेज की भारी सेन, बम्ब फौज,
भागि कै तिलंगन ने अपनी गली लई।

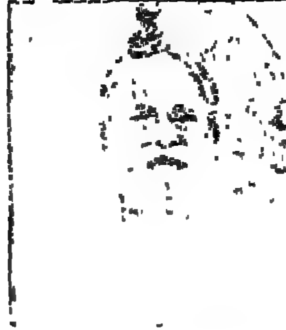
बीर शिवरतन सिंह लै के शमशेर हाथ,
समर मा जूझि गयो, कीरति भली भई।

चन्दा पति हिन्दपाल, लाल माधव, रघुनाथ
अच्छा कै निगोड़े सबै पीछै कै दगा दई।

कहै बच्चू लाल नाक कटी सब राजन की,
वीरता अकेली संग राना के चली गयी।।

*संकलन*- **जयवर्धन सिंह**





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **पं० जैगोविन्द शर्मा** |
| पिता का नाम | : | पं० विश्वनाथ त्रिपाठी |
| जन्म | : | माघ बदी द्वितीया विक्रम संवत् 1914 |
| जन्म स्थान | : | ग्राम- पाटन |
| शिक्षा | : | व्याकरण से आचार्य ज्योतिषाचार्य |
| रचनायें | : | राम विनोद नाटक सातों कांड, सीता राम शतक, राधे श्याम शतक, गणेश जन्म नाटक, होलिका कथा, गंगाष्टक, हनुमानाष्टक<br>तिथि प्रकाश संस्कृत भाषा में तथा मुक्तक छन्द |
| स्थायी पता | : | ग्राम व पोस्ट पाटन, उन्नाव।<br>दूरभाष - 250153 |

# अथ रामो विजयतेतराम्

सवैया-

पश्चिम काशीपुरी ते प्रमाण अहै नखयोजन स्थान जहाँ हौ।
त्यौंही पुरी मथुरा ते परी दिशि पूरब एक सौ कोस तहाँ हौं।
पाटन ग्राम उन्नाव जिला, जैगोविन्द मो नाम निकाम महा हौं।
कीन्हयो सनाथ सही रघुनाथ नहीं कहां नाथ की गाथ कहाँ हौं।।

आपके पिता का नाम प० श्रीविश्वनाथ था।

नाराच- त्रिपाठी शम्भु दत्त के सुपुत्र विश्वनाथ हैं।
तनै सु तासु जैगोविन्द, राम जासु नाथ हैं।।

**ग्रन्थ के कतिपय अंश-** सम्पूर्ण जीवन का निचोड़ देते हुए कवि ने लिखा है-

**दोहा-** जैगोविन्द धन धाम सुत, नारि बाजि गज गात।
सब व्यकाम बिन राम ज्यों, दूल्हा बिना बरात।।

निज गुरु की वन्दना करते हुए कवि ने निम्न पद्य की रचना की-

गुरुन्नतोऽहं रघुनाथ दासं दृगुत्सवं सश्रवणीय गाथम्।
कृपालु रार्त्तम्परिपातु मां सः सपद्यभीष्टं प्रददन्मदीयं।

परमपिता परमात्मा के समग्र अवतारों को कवि ने छन्द में वर्णित किया है-

**सवैया-**

मीन है आनि श्रुतीन को दीन मलीन तुरगम् ग्रीव हरयो है।
कच्छ लै मंदर सिन्धु मथ्यो, ह्वै वराह लै दंत धरा उधर्यो है।।
पाल्यो जनै जैगोविन्द नृसिंह है, वामन ह्वै पद विश्व कर्यो है।
भागर्व ह्वै भू निक्षत्र करयो, अब भूप के सूनु है सूप पर्यो है।।

**राम को ही अपना साहब मानते थे किसी संसारी राजा महाराजा को नहीं**

सर्व शक्ति वारो सर्ववासी सर्व न्यारो, चिदानंद सत्यसारोनित्य शुद्ध निर्विकारो है।
देवन जोहारो प्रभो भूमि भार टारो, निज विरद विचारो धारो औध अवतारो है।
सुयश पसारो सर्व दुष्ट दल मारो, देव काज निरधारो जैगोविन्द भार टारो है।
श्याम रग वारो शील सुषमा अपारो, दशरत्थ को दुलारो राम साहब हमारो है।

तत्कालीन समाज में व्याप्त ईश्वर के प्रति अविश्वसनीयता को दृढ़ कराते हुए कवि ने निमन छन्द विरचा-

देखौ रे विचारि राम होते जो न दीन बन्धु,
मात के कुचन कौन क्षीर उपजावता।
ओज के भरे तौ राजते रहैं उरोज तिमि,
रोज रोज क्यों नहीं हमेश क्षीर आवता।।
याते जग जाहिरै जनाति जानकीश जी की
दीन बन्धुताई दीनताई क्यों न लावता।
स्वामि रघुनाथ को दुलारो जन जैगोविन्द,
आश त्राश नाश के गोविन्द गुण गावता।।

ईश्वर में अटल विश्वास जागृत करने के लिए कवि ने निम्न पद्य लिखा-

**सवैया-**

जोई राम महावृष्टि व्याकुल विलोकि बृज, इन्द्र गर्व गंजन गिरीन्द्र कर धारा है।
जोई राम मुंज वन वृज की विलोकि व्यथा, पावक प्रबल पुंज पान करि डारा है।।
जोई राम कालीदह मृतक जियायो बाल, काली काढ़ि कालीदह दाह को निकारा है।
जै गोविन्द दीन को दयालु परिपूर्ण काम, सोई राम आठौ याम रक्षक हमारा है।

**मनहरन-**

कहूँ ह्वै विरंचि सृष्टि रचता अनेक भाँति,
कहूँ ह्वै मुकुन्द सृष्टि पालत अपेला है।
कहूँ कै महेश वेष सृष्टि खास नाश करै,
या प्रकार तीनि रूप धरै तीनि बेला है

कहूँ जैगोविन्द देव वृन्द है अनद करै,
कहूँ बनि दैत्य देव झगर झमेला है।
कहाँ लौ बखानिये न जानिये सो वाकी गति,
है सही अकेला पै अनेक खेल खेला है।।

इस प्रकार महाकवि ने तुलसी की भाँति सर्वसाधारण जनों में ईश्वर के प्रति अनन्य, अटूट प्रेम व आस्था जागृत करने का प्रयत्न किया ताकि प्राणी का इस जगत में जन्म लेने का उद्देश्य सिद्ध हो जाय। इतने पर भी यदि मानव ने ईश्वर को सर्वोपरि मानकर उसका स्मरण नहीं किया और सांसारिक क्रियाकलापों में उलझा रहा तो उसका जीवन कैसा है कवि के शब्दों में-

**मनहरन-**

धिक सुत वाम धिक ललित ललाम धाम
धिक ग्राम ठाम धिक धन धिक तन है।
विद्याधिक बुद्धिधिक तत्व मत्व शुद्धिधिक,
धिक वा अशोक देवलोक को वसन है।।
योगधिक भोग धिक सकल संयोग धिक,
धिक ज्ञान ध्यान धिक रहनि नगन है।
धिक जन्म बीता धिक जीता अनजीता धिक
जैगोविन्द जो न भयो सीताराम जन है।
गाय ले गीत रे मीत रघुनाथ के,
जात नगिच्यात दिन गौन केरा।
ना रही मन मौज जब फौज यमराज,
की बाज की भाँति सों करी फेरा।।
त्याहि ठाम बिन राम रे निमकहाराम,
सुत वाम धन धाम क्यहि काम केरा।
जैगोविन्द जड जागु हरि चरण अनुरागु,
बनि जायगो अजहुँ सबु स्वाँगु तेरा।।

कवि का समग्र जीवन समाज के हित मे, उपदेश में, ज्योतिष शास्त्र के प्रसार में और श्री सीताराम, राधाश्याम के गुणानुवाद में ही व्यतीत हुआ। कवि ने अपने जीवन को परमात्मा के तत्व ज्ञान में समर्पित किया और अन्त में ईश्वर से याचना की व भारत जैसे महान कर्मभूमि देश में जन्म प्रदान हेतु निम्न पद में आभार व्यक्त किया।

**मनहरन–**

दीन्ह्यो जन्म भारत में सोऊ नर सोऊ विप्र
सोऊ सब अंग सुठि सुषमा सुलहतैं।
विद्या बुद्धि विनय विवेकताहू दीन्ह्यौ पुनि
दीन्ह्यो दृढ़ता हूँ निज द्वार बैठि रहतैं।।
एहो करुणा कर करयौ है जहाँ एती कृपा,
तहाँ अब एती प्रार्थना हू बनी गहतैं।
जैगोविन्द देश और विदेश घर बाहेर हूँ,
छूटै तनु राधेश्याम राधेश्याम कहतैं।।

और इस प्रकार मानवजाति को "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की भाँति ज्ञानरूपी प्रकाश प्रदान करते हुए यह उद्‌भट विद्वान सम्वत् 1962 विक्रमी चैत्र अमावस्या को पञ्चतत्व में विलीन हो गये। इनकी कृतियों के द्वारा समाज को जो प्रेरणा मिली अद्वितीय एवं अविस्मरणीय है।

*संकलन*– **शिवदुलारे त्रिपाठी,** पाटन, उन्नाव



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | . | **दुर्गा चरण मिश्र** |
| आत्मज | : | ब्रह्मलीन पं० शिव प्यारे मिश्र |
| जन्म | : | 24 जुलाई 1938 |
| मूल निवास | . | पूरे बचरी गोपाली खेड़ा, रायबरेली |
| शिक्षा | . | एम.ए. (अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, हिन्दी) साहित्य रत्न |
| प्रकाशित साहित्य | : | कांठ की हांडी, गीत मेरे गीत (काव्यसंग्रह) स्मृति कलश (संस्मरण) मेरी यात्रायें (यात्रावृत्त) |
| अप्रकाशित | . | 1. स्मृतियों के घेरे<br>2. अपरिचितों से परिचय कर लो।<br>3. लेखमाला<br>4. कवि-वाणी (काव्य संग्रह)<br>5 सलामत रहे सिर (हास्य व्यंग्य)<br>6 कच्चा चिट्ठा (रिपोर्ताज)<br>इसके अतिरिक्त अनेक रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। कई पत्रिकाओं का आपने सम्पादन भी किया है। |

# हम शहर आ गए

अपना प्यारा सा गॉव, पूरे बचरी है नाव
जहाँ हम पले, नीम की छाँव के तले
छांव में पाठशाला, पास में थे शिवाला
नाचती थी मयूरी, कोई भी न थी मजबूरी
अमराइयों की घनी छाँव को छोड़कर, हम शहर आ गए
अपरिचित कोलाहल भरी, भीड़ में खो गए
आम के बाग में, खेत खलिहान में
बचपन कटा, अठखेलियाँ खूब करते हुए
याद आते हैं, मन्दिर और तालाब सब
महुए की मीठी महक आज अब
माटी की सोंधी महक छोड़कर, हम शहर आ गए
अपरिचित कोलाहल भरी, भीड़ में खो गए
वह नहर का किनारा, कितना सुन्दर नज़ारा
था माहौल प्यारा, जहाँ बचपन गुजारा
धूल से थे भरे वे रस्ते, प्रेम-पगे किन्तु थे रिस्ते।
गांव में सबसे ऊँचा मंका था, यही अपना आशियाँ था।
रोजी रोटी के चक्कर में, हम शहर आ गए।
अपरिचित कोलाहल भरी, भीड़ में खो गए।
अपने में ही सब यहॉ व्यस्त हैं, चिन्ता में डूबे हुए पस्त हैं।
हादसों से भरी हुई बस्ती है दीख पड़ती नहीं कहीं मस्ती है।
लगते सभी लोग अजनबी, कशमकश से भरी हैं यहॉ जिन्दगी।
दिखावा भरा व्योहार है, यहाँ मेला न कोई त्योहार है।
ढोलकों की मधुर थाप को छोड़कर, हम शहर आ गए।
अपरिचित कोलाहल भरी, भीड़ मे खो गए।



# यह धरती वीर जवानों की

हम अड़े हुए हैं सीमा पर,
दुश्मन से लोहा लेने को।
परवाह नहीं करते कुछ भी,
हैवानों या शैतानों की। यह धरती ......
हम परम्परा से सैनिक हैं।
निज मातृभूमि के रखवाले।
इतिहासकार बैठा लिखता,
गाथा असंख्य बलिदानों की। यह धरती .......
हम शरणागत के सेवी हैं,
उनकी विपदायें सह लेते।
चिन्ता न कभी करते मन में,
फिर आँधी या तूफानो की। यह धरती .......
हम मोह त्यागकर प्राणों का,
लड़ते हैं नभ में जल-थल में।
माँ बहनें रखवाली करती हैं,
खेतों और खलिहानों की। यह धरती ... ....
गिरि सागर हमको प्यारे हैं,
झीलें नदियां मैदान सभी।
चुटकी भर धूल नहीं देंगे,
अपने इन रेगिस्तानों की। यह धरती ......



# प्यार का वरदान देना

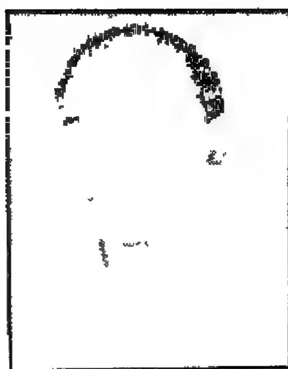
गीत मेरे पांखुरी में बॉच लेना,
साथ में अंकित पता भी जान लेना।
यह बता देंगे तुम्हें मन की व्यथा को,
जिन्दगी की अनछुई मेरी कथा को।
गीत-दर्पण में छिपी तस्वीर को पहचान लेना,
गीत मेरे पांखुरी में बांच लेना
मन भटकता ही रहा है अब तलक,
चैन पाने को तरसती ही रही मेरी पलक।
लोभ-तृष्णा मिट न पाई उम्र थी बढ़ती गई,
उलझनें मन के शिखर पर बेल सी चढ़ती गई,
उलझनों के बीच पनपे, मधुमय क्षणों को जान लेना,
गीत मेरे पांखुरी में बॉच लेना।
भेद अपना और पराया मिट कभी पाया नहीं,
स्वार्थ टकराते रहे पर दिल न मिल पाया कहीं।
जिन्दगी की सान्ध्य बेला में भला किसको पुकारूं
गीत मेरे मीत हैं, अब जरा उनको सवारूँ।
मेरे सुकोमल गीत को तुम प्यार का वरदान देना,
गीत मेरे पांखुरी में बॉच लेना।



# गीत मेरे

मेरी गुनगुनाने की आदत के पीछे,
तुम्हे गीत सुनने की चाहत रही।
सुनो गीत और मुस्कराते रहो तुम,
मुझे तो सुनाने की ख्वाहिश रही है।
नगमों के सागर में तुम डूब जाओ,
दिल में मेरे ये हसरत रही है।
रहेंगे हजारों बरस गीत मेरे,
हम-तुम रहें यह जरूरी नहीं है।
ये मौसम, ये महफिल, मिले कब दुबारा,
अंदाज करना भी मुमकिन नहीं है।
कहाँ के हैं हम और कहाँ हम को जाना,
भेजा है क्यों, किसने, पता तक नहीं है।
जिन्दगी चार दिन की, हंसो और हंसाओ,
दुश्मनी पालना अब, मुनासिब नहीं है।
समय पट्टिका पर लिखे गीत मेरे,
मिटा दे कोई उसके वस में नहीं है।





## *जीवन परिचय*

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **नरेन्द्र सिंह 'आनन्द'** |
| पिता का नाम | : | श्री नारायण सिंह |
| माता | : | स्व० कमला सिंह |
| जन्म | : | 22 जून 1946 |
| वर्तमान | : | 705, अब्बास बाग, उन्नाव |
| स्थायी | : | ग्राम–हिलगी, पो० मझिगवां (बारा), उन्नाव। |
| लेखन | : | विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित गीत, गज़ल, छन्द एवं मुक्तक। उन्नाव से प्रकाशित 'अराधना के स्वर' |
| व्यवसाय | : | वर्तमान में विवेकानन्द इं० का० मोतीनगर में अध्यापन। |

# गीत (1)

बट के वृक्ष खजूर हो गये,
पीपल भी मज़बूर हो गये।
मायावी शिखरों पर चढ़कर,
हम अपनों से दूर हो गये।।

वारिधि सी गहराई जिनकी,
नभ के भी जो मापदण्ड थे।
जो मानवता के प्रतीक थे
व्यक्तित्त्वों के मानदण्ड थे।

जिनके वरद हस्त के रहते,
चकवड़ देवदार से दिखते।
जिनकी वक्र भृकुटि के सम्मुख,
हिमगिरि भी तिनके से दिखते।

जाने किन दुश्चक्रों में पड़
सत्ता के नासूर हो गये।
बौनी लगे नियति शकुनी की,
इतने बड़े कसूर हो गये।।१।।

दर्पण के प्रतिबिम्ब खो गये,
अन्त हीन विश्वास सो गये।
पीड़ाएँ इतिहास बन गयीं।
समाधान बीमार हो गये।

आत्मघात के भाव पल रहे,
जीवन के उदास खण्डहर में।
हम अपने को आप छल रहे।
मदमाते स्वारथी शहर में।

जितने स्वप्न संजोये हमने,
सबके सब काफूर हो गये।
आस्थाओं के भव्य भवन भी
गिरकर चकनाचूर हो गये।।२।।

# गीत (2)

मैने जग की हर पीड़ा को अपना ही समझा
किन्तु हमारे अपने हम पर हँसते चले गये।
मैंने जीवन की सुधियों को बीता कल समझा,
किन्तु आज के विषधर, हमको डसते चले गये।।

रिश्तों के सुरभित उपवन में, सुमन स्वार्थ के खिलते,
मय से आपूरित कानन में, शूल श्राप के मिलते।
मैंने पतझर की दस्तक को ही बसन्त समझा,
किन्तु फागुनी झोंके पीर परसते चले गये।।१।।

मधुमासी भँवरों का गुंजन मौन हुआ ऐसे,
हरी फसल को निष्ठुर पाला मार गया जैसे।
मैंने जग के हर बन्धन को, रीति रस्म समझा
किन्तु आस्था रहित जाल में, फंसते चले गये।।२।।

महलों की ऊँचाई में, इतिहास गुनाहों का,
और गरीबों की कुटिया, सन्देश मसीहों का।
मैंने बेबस लाचारों को, देव रूप समझा,
किन्तु हाथ आहुति के साथ झुलसते चले गये।।३।।

भ्रष्टाचारी मौसम मे, व्यवहार प्रदूषित है,
सिक्कों की खनकाहट में, अन्याय प्रपोषित है।
मैंने जग के आदर्शों को, ज्योतिपुंज समझा
किन्तु नियति के अंधियारे ही बसते चले गये।।४।।

# गीत (3)

स्वप्न ऑखों में लिए अमराइयों के,
हम बबूलों की चुभन देते रहे,
हर तरफ धू-धू चिताएं जल रहीं,
और हम खामोश हो सोते रहे।

ऊर्जा को पथ नहीं अब सूझता,
कांपती है नाव बिन पतवार सी।
अश्रु घड़ियाली चतुर्दिक बह रहे,
बागवाँ की नियति है सय्याद सी।

प्रगति दस्तावेज़ हाथों में लिए
बीज हम विध्वन्स के बोते रहे।।१।।

बन गये बेटे तिजोरी हैं यहां,
अब शहादत बेटियों के नाम है।
लाख अमृत घट पिलाओ तुम इन्हें,
विषभरी फुफकार ही परिणाम है।

कृष्ण की गीता लिए सौगन्ध में,
पालते ये झूठ के तोते रहे।।२।।

दूसरों को जो सुनाते ही रहे,
स्वयं की बारी तो बहरे बन गये।
खुद बने थे न्याय का पर्याय जो,
राजमद में आज शकुनी बन गये।

पालकर मिथ्या अहम् आदर्श के,
सत्य की पगडंडियां खोते रहे।।३।।

प्रात पर छाया घने आतंक की,
हर बसेरा दिख रहा वीरान है।
सृष्टि के अधिकार सब इनके लिए
कत्ल ऐसे कर रहा इन्सान है।

थी जिन्हें पहिचान मंजिल की बहुत,
स्वयं की पहिचान को रोते रहे।।४।।

# गीत (4)

पीड़ा की छांव तले दीप जले यादों के,
तिरते हिय सागर में भाव फिर विषादों के।

जीना और मरना तो सृष्टि की अमानत है,
क्षण भगुर जीवन में, सत्य ही नियामत है।
सांसों की डोर बंधे, रिश्ते सम्वादों के।। १।।

सहमें शुक हैं बैठे, चिर परिचित पिंजरों में,
कांपते बटोही हैं, बहुचर्चित बजरों में।
परिलक्षित नयनों में, आंसू फरियादों के।।२।।

बड़बोले मंचों के अभिनेता बौने हैं।
जनवादी धरती के, मखमली बिछौने हैं।
उन्मादी ग्रन्थों में, पन्ने अवसादों के।।३।।

पोषक मानवता के, बिकते बाजारों में,
सत्ता के मोहरे सब, उलझे व्यापारों में।
विस्फोटक चालें हैं अंकुरण फसादों के।।४।।

राही चलता अपनी मंजिल पा जाने को,
दीपक भी जलता, अंधियारा पी जाने को
गूगी भाषाएं मुंह तार्के अनुवादों के।।५।।



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **कु० नीरजा सिंह** |
| पिता का नाम | : | श्री रमाशंकर सिंह |
| माता | : | श्रीमती उर्मिला देवी |
| जन्म | | 1 जुलाई, 1967 |
| बहनें | : | कु० सुनीता सिंह व कु० अलका सिंह |
| शिक्षा | : | एम.ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत) बी.एड. |
| पता | : | ग्राम-सैदपुर, पोस्ट- बीघापुर, जिला उन्नाव |
| रुचि | : | अध्ययन एवं अध्यापन |
| सम्प्रति | : | प्रधानाचार्या सिद्धार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकुरीमऊ, उन्नाव |

# राधा-कृष्ण

सिर पे तिरछा धरि मोर पंखा कर में लकुटी कटि काछिनी राजे
गोपी औ ग्वाल लिये संग में वन कुंजन में छवि मोहिनी छाजे।
राधिका संग गहे द्रुम डार औ मोहिनी तान में बॉसुरी बाजे
याचना कामना एक यही मन मन्दिर में छविनाथ विराजे।।१।

धेनु चरावत बेनु बजावत नाथत नाग चुरावत सारी
रास रच्यो कहुं गोपिन सो तो पुरन्दर कारन भे गिरधारी।
कस हन्यो कबौ दूत बन्यो कबौ लाज बचायो बढ़ावत सारी
रथ हाँक्यो कबौ महाभारत में कबौ गीता पढ़यो तुम कृष्ण मुरारी।।२।

राधिका के उर में बसिकै घनस्याम को अंतस डोलि गयो है
उन कुंचित केसन से नथि कै वह नाग को नाथिबो भूलि गयो है
राधिका की छवि जइस पीताम्बर धारि रहस्य यो खोलि गयो है
स्याम हैं राधिका राधिका स्याम बतायो नहीं पर बोलि गयो है

प्रीति के पंथ में यो चलिकै निज प्रीति को मान बढ़ावति राधा
धुनि कान परै बंसुरी की जबै तजि काज उतै उठि धावति राधा
तिरछे करि-नैनन भौंहनु सैन कबौ मुस्काय रिझावति राधा
देन कहै छछिया भर छाँछ औ कान्ह को नाच नचावति राधा।

प्रात गयी हुती बाग को मैं जहां राह मा रोकि मिले गिरधारी
चाहा बची मग छाड़ि चली झपटे तब स्याम औ पाइगे सारी
सारी छुड़ावत चूकि गयी वहि अंकभरयो मोहि बांह पसारी
आंख खुली सपना निकस्यो अब प्रान तो प्यासे पिया को पियारी

घनस्याम के रंग रंगी जब ते तन धारत हौं नित नीलम सारी
रस नाहीं मिलै रसना को कहीं बस नाम रटै एक कृष्ण मुरारी
कदम्ब करील औ कुंज कै केलि कलिन्दजा कूल किसोर की यारी।
भूलौ भले न कहीं कबहूं अब प्रान तो प्यासे पिया को पियारी।।

राह मा रोकि के रारि करै औ देत मेरो दधि रोज बिड़ारी।
चीर चुरा चुपके चितचोर चिरौरी करावै न देत है सारी
पतियाय रह्यो कुबरी पै निरी बंसुरी पे मरै जो है सौत हमारी।
जानत हौं छलिया बड़ो छैल पै प्रान तो प्यासे पिया को पियारी।

राधिका के मुख की छवि देखि कै ब्रह्म ने चन्द्र को रूप बनायो।
कीर्ति कुमारी की कान्ति लसै यहि हेतु मयंक को भी चमकायो।
समता न हुई जब राधिका से रचना करता मन में पछितायो
आस में जोड़त है एक पाख में, दूसरे पाख में तोरि बहायो।

# नारी

जन्म से ही अवसाद मिला, लरिकाई में भी न मिला सुख कोई।
घोर अपेक्षित हो के पली उपहासित हो मन ही मन रोई।।
यौवन में भंवरों से लुटी, कहीं हाट बिकी सेजिया पर सोई।
नारी निराश्रत होके पली, उपहासित हो मन ही मन रोई।।

पति के सग में वनवास गयी, पति कारन ही धरती में समानी।
पति कारन हारी जुएं में गयी, पति सों हठ थी यमराज से ठानी।।
आन निबाहिबे को पति की, हंसि हाट बिकी हरिचन्द की रानी।
नारी वही पति हाथों जली यह दायज दानव की है कहानी।

अपराधी पुरन्दर थे फिर भी गयी पाहन मातु अहिल्या बनायी।
दोषी दशानन था फिर भी गयी मातु सिया वनवास पठायी।।
ब्याही गयी संग पारथ के पति पांच बने पान्चाली कहायी।
पापी सभी निष्पाप बनें अपवित्र सदा गयी नारी बनायी।

सिर ऊचा रहे पति का यहि कारन शैव्या बिकी बनी दासी बेचारी।
पति अन्धे के खातिर पट्टिका बांधि के अन्धी बनी खुद ही गान्धारी।।
स्याम भये कुबरी के तबौ घनस्याम रटै बस कीर्ति कुमारी।
व्रत तीरथ कीन्हे अनेक तबौ पति से रही नीच सदा यह नारी।

विधि ने रचना करि सृष्टि सृजी तब नारी से सृष्टि ने जन्म लियो है।
पाप नशावन पावन पूज्य ने बाधा और विघ्न को दूरि कियो है।।
दुःख लीन्हे सदा अपने सुत के सुख बाटि हिये से सनेह दियो है।
जन की जननी जगती में बनी तब मातु के नाम को धन्य कियो है।

मातु भगीरथ की मैं रही जो उतारि के गंग धरा पर लाये।
मेरी ही कोख से पैदा हुए श्री राम जो रघुकुल नाथ कहलाये।
मातु मैं भी ध्रुव भीषम की प्रण ठानि कै जो इतिहास बनाये।
मातु मैं ही उन वीरन की जिन देश की आन पे शीश कटाये।

दुर्गावती बनि आयी कबौ कबहूँ हमहीं बनी झाँसी की रानी।
वीर शिवाजी की माता कबौ आजाद की माता कबौ जगरानी।।
पुतली बनि गांधी की माता बनी जिसने दी मिटा गोरों की निशानी।
एनी बेसेन्ट सरोजनी नायडू इन्दिरा रूप में नारी भवानी।।

नवरात्रि में तेजस्वरूपा है नारि औ धर्म की तेज पताका यही है।
शील स्नेह की मूरति है जग में नव ज्योति शलाक यही है।।
मातु बनी भगिनी वनिता गुरु रूप में ज्ञान प्रकाश यही है।
इन्दिरा के रूप में शक्ति का पुंज औ सीता के रूप विनीता यही है।

# गीत

मैं दिया हूँ दिया बनके जलती रहूँ।
घोर तम को हटा मैं उजाला करूं।।
पालती स्नेह से जन्म देकर जिसे
हर बला से बचाती फिरूं मैं उसे
मां के आंचल की ममता लुटाती फिरूं
ज्ञान का पाठ भी मैं पढ़ाती रहूँ
बन गुरु प्रेम गीता पढ़ाया करूं
मैं दिया हूं दिया बनके ----

राष्ट्र की आन पे हिन्द की शान पे।
मातृभू को बड़ा स्वर्ग से मान के।।
पति को भी भेज दूं पुत्र भी भेज दूं।
राष्ट्रहित सिर कटे व वतन पे मिटे।।
आरती मैं खुशी से उतारा करूँ।।
मैं दिया हूं दिया बनके.......
स्वार्थ के लोभ में आदमी जब फंसे।
दो टके के लिए आदमी जब बिके
जब गरीबों की बेटी की अर्थी उठे।
वह थी बेटी किसी भी बहू आपकी।।
क्यों जला दी गयी यह पुकारा करूँ।
मैं दिया हूं दिया बनके .....



# माँ चन्द्रिका देवी

कसक उठा था मन चिंतित विशेष हो के,
व्याकुल विकल अति विषम विषाद से।
ध्यान किया युगल तुम्हारी भव्य मूर्तियों का
शान्ति मिली भ्रान्ति मिली माँ भय के निनाद से।
आधि व्याधि रोग शोक संकट विकट सब,
चण्डिके ! है जाते मिट एक तेरी याद से।
सुख और सम्पदा तथैव यश—मर्याया
भक्तजन पाते तेरे विमल प्रसाद से।

**पं० देवीदत्त शुक्ल (बक्सर)**

*संकलित*– **आरती सिंह**



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **पं० मनीराम द्विवेदी 'नवीन'** |
| पिता का नाम | : | पं० हरि नारायण द्विवेदी |
| जन्म | : | पौष सुदी 6 विक्रम सं० 1962 |
| शिक्षा | : | अव्वल दर्जा (गांव में) |
| मंच से कविता पाठ | : | कलकत्ता कानपुर-उन्नाव लखनऊ अन्य क्षेत्रों में भ्रमण और साहित्य सर्जन |
| कृतियां | : | 1 नवीन बीन, 2 नवीन गुलछर्रा, 3 नवीन बापू गौरव, 4. नवीन चिनगारी, 5 नवीन कीर्तन, 6 नवीन समाज विप्लव, 7 नवीन फाग संग्रह, 8 नवीन कीर्तन पीयूष, 9 नवीन कीर्तन कुंज, 10. नवीन भक्ति सरोवर, 11 नवीन रणभेरी, 12 नवीन पंचामृत, 13 एक महात्मा का जीवन चरित्र, 14 नवीन शिव विनय। |

# काव्य की परिभाषा

काव्य का ढांचा नवीन हो यों, कविता खुद ही खुद ढांचती जावे।
क्लिष्टता में न संकोचती हो, खुल के सब के मन जांचती जावे।।
छोड़ दे शब्द को बीच ही में, उड़ती संग भाव के नाचती जावे।
बांचता हो कवि ले कविता, कविता निजभाव को बांचती जावे।।

# कवि और कविता

कोई पढे-देखे-सुने चाहना न लाता कवि,
काव्य रचने का जब ध्यान वन जाता है।
रुकता नहीं है कोटि भांति रोकने से कभी,
ऐसा एक मन में तूफान बन जाता है।।
भाषा भी नवीन बन जाती आप ही से आप,
और आप ही नया ज्ञान बन जाता है।
कवि कविता में प्रेमदान जब होता,
तब मौलिक उफान एक गान बन जाता है।
दोनों ओतप्रोत हो बनाते दुनिया है नयी,
दोनों में 'नवीन' अनुमान बन जाता है।
दोनों उड़ते हैं विधि सृष्टि भी छलाग जाते,
भव्य भावनाओं का विमान बन जाता है।।
दोनों मे सदैव भरा रहता अगाढ़ प्रेम,
एक दूसरे का मेहमान बन जाता है।
दोनों को न जाना गया कवि, कविता है कौन
कवि-कविता का एक प्रान बन जाता है।।
कवि की समस्त रचनायें छितराया करें
कोई कभी अपनी बिरानी बन जाती हैं।
कोई रद्दियों की टोकरी में छितराती फिरें,
कोई मदमाती पत्ररानी बन जाती हैं।।

कोई कहीं भावुक जनों की कापियों में छिपी,
कोई प्रेम पात्र की जवानी बन जाती है।
शान बन जाती है नवीन कवियों की
और जीवन की अमर कहानी बन जाती है
मित्र न रहेंगे बन्धु बांधव रहेंगे नहीं,
और न छिपी वो प्रेम रानी रह जायेगी।
रूप न रहेगा धन धाम भी रहेगा नहीं,
और न ये चढ़ती जवानी रह जायेगी।।
सेना न रहेगी अस्त्र शस्त्र भी रहेंगे नहीं,
वाक्य चातुरी की न निशानी रह जायेगी।
हम न रहेंगे बन्धु, तुम भी रहोगे नहीं,
कि ये सभी की मनमानी रह जायेगी।
कोई फिर आयेगा न कोई फिर आया यहां,
किसी की यहां ही मेहमानी रह जायेगी।
कोई सुख भोगेगा किसी को यातनायें मिलें,
किसी की न कोई निगरानी रह जायेगी।
कोई पछतायेगा किसी का दिल होगा खुश
किसी की महान लाभ हानि रह जायेगी।
हम न रहेंगे बन्धु तुम न रहोगे यहॉ,
कीर्ति अपकीर्ति की निशानी रह जायेगी।
एक दिन आयेगा न आयेगा बहाना कुछ,
कुछ न नवीन परेशानी रह जायेगी।
कौन रह जायेगा विचार कर लेना खूब,
सत्य-कर्म-धर्म की कहानी रह जायेगी।
पर उपकार दया ध्यान पूजा पाठ,
हरि गुणगान की बखानी रह जायेगी।
हम न रहेंगे बन्धु तुम न रहोगे यहां,
स्वर्ग-नर्क-मोक्ष पहचानी रह जायेगी

# ईश्वर की व्यापकता

रस जल में हो शशि सूर्य में प्रकाश तुम्हीं,
गन्ध हो धरा में तेज अग्नि में तुम्हारा है।
शब्द हो अकाश में प्रकोप वायु में भी तुम्हीं,
सारे जीव मात्र में तुम्हीं ने अंश धारा है।।
हम करते हैं हम कौन है कहां है सब,
मारना उबारना तुम्हारा खेल सारा है।
मन में विवेक में तुम्हीं हो क्या करे 'नवीन',
आयसु तुम्हारा कर्म करना हमारा है।

# भ्रष्टाचार

मिलिगै सुराजि राम राजि मिली बापू केरि,
दुःख दुखियन का दूरि भवा तन कौ।
कोऊ न सुनत है गरीबन कै बात कुछु।
हांथ पांव ज्वारौ चहै राति दिनु ढुनकौ।।
कौनो न अनून न कनून निवरा कै चलै,
भनकौ मनैं मां चहै झूरि झारि सनकौ।
मइय्या कहौ, बाबू कहौ एकु न सुनैं 'नवीन'
आंखि कुछु फ्यारैं जो रुपइय्या लाइ खनकौ।
बाना सेवकाई का निशाना है कमाई क्यार,
ताना ऐसा ताना कि जमाना जैस जाना है।
जिन कै जमाति है उन्ही कै करामाति सब,
कोऊ न कोहू का कहै कैंया है कि करना है।।
स्वारथ कै बात है 'नवीन' परमारथ मा,
जेतनैं जहां से मिले दीनि छीनि खाना है।
दाना न ठिकाना जहां महल खजाना खड़ा।
दौलत कमाना यहै ठानु ठाना है।।

जिनका ईमानदार जाना उन्हे वोट दीन,
पदुबड़ा पाएनि बड़े वीं बन जाति हैं।
भूले अपने मां बरबन्डु मा घमण्डु घुसा
ब्वालौं तो नर्वान टेढ़ी-मेढ़ी बतलाति हैं।
बातै सुनी-घातै लखी-लातै उनहीं की सही,
डेरु न विधातै करामातै करे जाति हैं।।
रक्षक कहावैं जौनि भक्षक बने हैं तौनि
तक्षक समान लुकि-लुकि काटि खाति हैं।
जो है जौनु पदमा, बनाये भेषु वातै रंगे।
सत्य नीति रीति की न प्रीति बसी मन मा।
देश की समाज की स्वधर्म की स्वकर्म की न
चाह परवाह न दया है गरीबन मा।।
को है कौनि कहि के नवीन नहीं जाने जाति,
छन मा तुम्हारि हैं बिरानि बने छन मां।
छन ते सिपारिस ते धाय धाय कामु करै।
सब कै निगाह गै पहुँचि ठनाठने मा।।

# बापू पुकार

आओ बापू देखि जावं, सब जन सुराजि मा भटकि रहे।
तुम सदा अहिंसा व्रत पालेऊ, अब हिंसा कै गति कहि न जाय।।
तुम सत्ति बात बोलेऊ सब ते, अब झूठि कहे बिनु रहि न जाय।
तुम छा पइसा मा दिनु काटेऊ, अब हाथु भरे कै जीभि बढ़ी।
तुम लोभु न राख्यो, रत्ती भरि, अब है सोने ते पीठि मढ़ी।
तुम बात सैकरन सहि लीन्हयो, सब बात बात मा मटकि रहे
तुम खद्दरुपहिरेऊ डेढु हांथु, सब जनता के सेवक बनि कै।
अब सब जनता का लूटि रहा खद्दरपुसाकते बनि ठनि कै।।

तुम कबौ न कउनौ पदु लीन्हेऊ, सब हाथ जोरि कै देत रहा।
अब सब पदनीके चाहि रहे, कायरवनिगे रन के दुलहा।
तुम घूसि लेन का पापु कहेऊ, सब लाखन रुपिया गटकि रहा
तुम पक्षपात ते दूरि रहेऊ, ना तनिकु सिपारिसि कबौ कीन।।
अब एकु सिपारिस के बल ते, उन अधिकारी पदु बड़े लीन।
तुम तनिक हुकूमति ना राख्यो, सब में सेवा का भावरहा।।
अब छोटा बड़ा पदुअधिकारी, सबका दिखाए निजु तावरहा।
तुम ईश्वर का बलु लिये रहेऊ, अब सब अपने बल चटकि रहा।



# बैसवारा कौन

हिन्दी हिन्दू लाज को अधर्म से बचाता कौन
विश्व चमकाता देश भाल का सितारा कौन!
एकता दिखाता बीर-पथ पे चलाता कौन,
शत्रु हिये पे "कृष्ण, मारता दुधारा कौन!
आन बान शान पे संहर्ष बलिदान होना,
सबको सिखाता दुःखी दीन का सहारा कौन!
बेनी माधव सिंह जो न लेता अवतार यहाँ,
जानता जहान में बताओ बैसवारा कौन!

**कविवर श्रीकृष्ण शंकर शुक्ल "कृष्ण"**
*संकलित*- **यशवर्धन सिंह**



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | · | राजबख्श सिंह |
| पिता का नाम | : | स्व० फतेबहादुर सिंह |
| पता | : | ग्राम व पोस्ट- बाजितपुर, उ |
| जन्मतिथि | | 1 दिसम्बर, 1951 |
| शिक्षा | : | एम०ए० हिन्दी (अध्यापक)<br>अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रच |
| दूरभाष | : | 250107 |

# गीत

ऐसे सूने घाट पड़े हैं, उतर गया नदिया का पानी
जैसे सूखी देह बिसूरे, अपनी चढ़ती हुयी जवानी।

बालारुण किरणों से तुमने,
पहले नेह निमंत्रण भेजा।
अब तुम्हें खोजते थके चरण,
मुँह से निकला पड़े कलेजा।।
ऐसे सूने महल दिखे हैं, चले गये राजा औ रानी
जैसे सूखी देह बिसूरे अपनी चढ़ती हुयी जवानी

रस में विष फिर घोल गयी,
रह रहकर मुस्कान तुम्हारी।
पिया रूप का आसव जब से,
बढ़ती जाये और खुमारी।।
ऐसे अपने लोग मिले, सुनकर हँसते राम कहानी
जैसे सूखी देह बिसूरे, अपनी चढ़ती हुयी जवानी।

क्या खोया क्या पाया जग में
हम ना जोड़ लगायेंगे।
हम मानस के राजहंस है,
अलस भोर उड़ जायेंगे।।
ऐसे चादर यहीं छोड़कर चले गये मूरख औ ज्ञानी
जैसे सूनी देह बिसूरे, अपनी चढ़ती हुयी जवानी।



# फसाद की जड़

एक बाला, अरुणिम नयनों से,
अपनी जंघा पर धरे,
पुरुष का म्लान मुख निहारती।
नतमुखी पूछती थी एक प्रश्न,
मेरे आँजनेय, अपने सजातियों के साथ,
फूँक आये जो स्वर्णपुरी,
उससे किसी सीता की मुक्ति तो नहीं हुयी ?
कुछ मर गयी कुछ घायल है,
कुछ मरने की प्रतीक्षा सूची में है।
सीतायें, सलमायें, ऊषा और सरफुनिशा।
उस मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर में कौन जायेगा
जहॉ कत्ल होते हैं
दया, क्षमा, ममता, उदारता, करुणा और स्नेह।
मैं भी न जाऊँगी- तुम भी फिर मत जाना।
सन्त गुरु पैगम्बरों के भेष में-
वहॉ कुछ आदमखोर घुस आये हैं।
सुना तो यह भी है कि सत्ता ही बदचलन है।
असल फसाद की जड़ वही है।



# दोहे

1 कनक कामिनी का हुआ, पट्टा तुम्हें तमाम।
मिला मुझे जागीर में, केवल हरि का नाम।।

2 पुत्र मित्र जिनके दिये, बल विद्या घर द्वार।
बिगरी वही बनायेंगे, जग के सिरजन हार।।

3 राजनीति अब हो गयी, बिन कोल्हू का बैल।
गधे गांव में डोलते, बने चिकनिया छैल।।

4. द्वार हमारे गोकुल, आंगन है बरसाना।
बागन वृन्दावन पसरा, होली खेलन आना।।

5 अंगुरी पकरे राधा, आचर तरे कन्हय्या।
मूंदे नैन खेत मा, गावै जसुदा मइय्या।।

6 दोहा गीत कवित्त से, हुयी हमारी प्रीत।
तुलसी- सूर, कबीर, अब हुये हमारे मीत।।

7 राम-रहीम शीस धुनते हैं, बैठ एक ही मेंड
किसके दम पर- सींचा पाता खेत खा रही भेंड।।

8. पीर जगाकर लिखा इसे है, भरी है इसमें आंच।
ढाई आखर लिख न पाया- बॉच सके तो बाच।।

9 देखी तेरी लीला रिस्वत, देखा तेरा खेल।
दिन दोपहर में गोली मारी फिर भी गये न जेल।।

10 कबिरा इतना चाहिये, दल बहुमत पा जाय।
मैं मुख्यमंत्री बनूं, चेले रबड़ी खायें।।



# गज़ल (पड़ोसी)

क्यो हम से नाराज पड़ोसी,
सीने लगजा आज पडोसी।
एक दूजे पके पड़े है करने,
जाने कितने काज पड़ोसी।
मंदिर मस्जिद बतियाने की
आ बैठ सुने आवाज पडोसी।
जितना तुमको उतना हमको,
है बेला पर नाज पड़ोसी।
मेरे घर ही नहीं तुम्हारे घर,
भी मंडराते हैं बाज पड़ोसी।
जिन खेतों में बम बोये थे,
चल अब बोयें अनाज पड़ोसी।
एक जान दो देह कहें सब,
है रफीक रघुराज पड़ोसी।।



# मुक्तक

गाऊंगा फिर गीत किसी दिन गाऊंगा।
आऊगा फिर मीत किसी दिन आऊंगा।।
पहले जन्मभूमि का कर्ज चुका लूं।
सीमा से फिर जीत किसी दिन आऊंगा।।

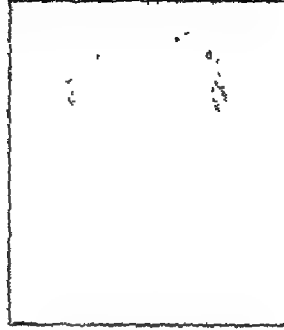
अब तक की सब उमर कहानी लगती है।
खोया-पाया वह सब बात विरानी लगती है।
जब से तुम्हें सनेही देखा आगे-आगे चलते।
पथ मे अब हर गजल सुहानी लगती है।

3 खुशी के इन लमहों को गुजर जाना है।
महकते इन फूलों को बिखर जाना है।।
मुसाफिर है एक छत के तले बैठे हैं।
क्या पता किसको किधर जाना है।

4. ले लो मेरा चांद, चांदनी ले लो।
ले लो मेरे गीत रागिनी ले लो।।
मुझको जाने की जल्दी है।
ले लो मेरी आँख रोशनी ले लो।।

5. निर्धन का एतबार करे या न करे।
विपन्न का सतकार करें या न करें।।
मर्जी उनकी है मोती नयन सीपियों के,
पूजन में स्वीकार करें या न करें।।





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **रौशनलाल यादव** |
| पिता का नाम | : | श्री रामरतन यादव |
| माता का नाम | : | श्रीमती रामदेवी |
| जन्मतिथि | : | 20 फरवरी 1954 |
| शिक्षा एव पद | : | बी०ए०, बी०एड० उपप्रधानाचार्य (श्री गंगोली आ०मा० विद्यालय महरामऊ) पूर्व प्रधान रानीपुर, संचालक (गन्ना समिति, उन्नाव) |
| पता | : | ग्राम- बदलेखेड़ा, पो० घाटमपुर, जिला उन्नाव। |
| भाई के नाम | : | श्री रामशंकर, कन्हैया लाल, रामदत्त, केवल सिह, रामनरेश। |

# भावना

भावना के भाव यदि भर न सको जो बन्धु।
ऐसे गीत गाना तुम सब छोड़ दीजिए।
जीवन को मिलै यदि सही अधिकार नहीं,
मीरा की तरह विष पान कर लीजिए।
राष्ट्र के विकास हेतु भावना के भाव न हो
ऐसी सरकार को तुरन्त हांक दीजिए।
लेखनी न लिख सके जनता गुजारिश
तो ऐसी लेखनी के खण्ड-खण्ड कर दीजिए।

# तिरंगा

चटसार के बीच तिरगा मेरा
यह बच्चों को सीख सिखाता रहे।
यह तरुवर मेरा तिरंगा सदा
अभिलाषा के पुष्प गिराता रहे।
त्याग, तपस्या और जागृति को
जय केसर रंग जगाता रहे।
रंग सफेद ते मोहि मिलै
निर्मलता में सत्य दिखाता रहे।
हरियाली हरा रंग देत हमें
सुख समृद्धि गीत बनाता रहे।
चक्र अशोक ते सीख मिलै
गुण धर्म विकास को लाता रहे।
लहराता तिरंगा हमारा पभो,
ये शहीदों की याद दिलाता रहे।
अभिलाषा तिरंगे हमारी यही
सर ऊंचा किये लहराता रहे।

राष्ट्रहित एकता की भावना से ओतप्रोत
तीन रंग मिलिकै तिरंगा बन जाता है।
मानसिक वेदना भरेगा यह बार-बार
सोते से सपूतों को तिरंगा ही जगाता है।
होते हैं शहीद सूर सरहद सीमा पर
लिपट तिरंगा उन्हें वतन दिखाता है।
आन बान शान की निशानी को न भूलो बन्धु।
सिर को हिलाय यह तिरगा ही बताता है।

## उन्नाव

उन्नाव की धरती मा वीर हुए
दूजी ओर रही कवियों केरि शाला।
गद्य लिखै मा प्रताप प्रवीन
औ वीरन में जग रानी के लाला।
इत काव्य की धारा सुमन जी बहे
उत बक्सर वीर ने तेगा सम्भाला।
हड़हा ते सनेही सनेह मिलेव
गढकोला मा पैदा हुए हैं निराला।
भरतीपुर में अलबेला हुए
जिन गीत, गजल ते है कीन उजाला
अवधी सम्राट है काका बने
उत लवकुश राम का युद्ध करा ला
कर कगन चूड़ी लड़ै तो लड़ै
पर सेनुर दूध लड़ै विकराला।
तुम गर्व करौ अपने मन मा
उनवन्त के नाम उन्नाव निराला।

# दहेज

है बड़ी मुसीबत शादी मा, बिटिया ब्याहै मा आवै हिचकी
लरिकउना हीरोहाण्डा मागै औ बप्पा मांगि रहे सुजकी,
कोउ पढ़ी लिखी कै करै बात उनका ऊंचा बहुतै मिजाज
वी गाडी मागै स्पेलण्डर या चाहिए कैलीवर बजाज
टी०वी०, अलमारी गोदरेज सपनेव मा द्याखै इन्द्रपरी
अपना मुँह दर्पण मा दयाखौ काहे तुम सुनि ह्यौ खरी खरी
देही साइकिल कै टैरू अइसि सुन्दर लड़की है कहां धरी
है मुहिमा पोते उजर उजर चमकै जस बादर मा बिजुरी
कोट पैण्ट पतलून पहिरिलेव टांगे हैं सिगरट जइसी।
देही मा तिनकिव झस नाहीं तुम घूमिप रहेव अइसी वइसी
जी बिटिया दयाखै जाती है मुंह रंगै चउथि का करना है
जी उनके साथ हुआ गे हैं डोली कै बनै कहरवा है।
जइसे वी पहुचे दरवाजे हाथे मा लइ पुडिया फारै
जब नज़र पडे लड़की के ऊपर मुंह मोड़ि लेय सिकुरा डारै
तब तो बिचवानी बोलिपरा यह कइसी परिपाटी है।
वी धीमे स्वर मा कहि दीन्हेन लड़की तो थवारा नाही है
तुम्हरे लरिका ते छोटि नहिन चाहे तुकुतान मिलाय लेव
विश्वास परै जो ना तुमका तुम फीता ते नपवाय लेव
जब नाप ज्याख मैं दूल्हन कै तो इन्च भरे का अन्तरु भा
तब भरम दूरि भा दून्हन का जइसे प्रयाखौ छू मन्तरु भा
तब तौ बिच वानी बोलि परा अब पंडित का बुलवाय लेव
है बना बनावा जोगु जागु शुभ कामु तुरत निपटाय लेव
जब खबरि मिली पंडित जी का झवारा झण्डा लेइ थे तयार
वी खुशी भये अपने मन मा टुटही साइकिल पर ये सवार
पडित जी मंजिल के प्यासे वी अपनिव टंकी खोलि लेहेन

जब पायेन शक्कर का शरबतु लोटिया दुइ चारि ढकेलि लेहेन
जब गिनेन प्यार की अगुरिन मा तब सुरजन क्यार दानु भारवै
तब तौ फिर मालिक घबड़ाने अनवन्त कामु नाहीं राखै
सब कामु तुम्हरो बनि जइहे यदि मनमा तुम धीरजु राखौ,
दक्षिना ते मतलबु है उनका वरु मेरे चही कन्या द्याखौ।

# बसन्त

ऋतु आयी बसन्त बहार सुनो
बने कोकिल बैन सुनावत प्यारी
नव पाकर कोयल अइसे लगै
जइसे नयी नवेली की लाल है सारी
सरसों के पीत प्रसून दिखै
जस कान्हा पितम्बर की छवि न्यारी
ऋतुराज बसन्त के आवन तें
सधवा है खुशी विधवा दुख भारी।
सूनो बसन्त है कंत बिना
चहु ओर समीर रही सरसाई।
फूली लता पर भृंग गुजै
सुनि मेरो हियो है रह्यो हरषाई।
वृक्ष लता केरि कोमल पात
नया धरि रूप रही समुझाई।
देखि सुहागिन प्यार सुहाग
विदेशी की याद हमें है सताई।



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **विष्णुदयाल सिंह चौहान** |
| पिता का नाम | : | स्व० श्री विहारी सिंह |
| माता का नाम | : | श्रीमती साधू देवी |
| पता | : | मोहकमपुर, वाजितपुर, उन्नाव |
| योग्यता | : | एम ए. बी.एड. |
| सम्प्रति | | प्रधानाचार्य रावराम बख्श सिंह नेशनल इण्टर कालेज, भगवन्त नगर, उन्नाव। |
| रुचियां | : | अध्ययन, अध्यापन एवं साहित्यसृजन<br>पत्र-पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित होती रहती हैं।<br>अक्खड़ बैसवारी स्वभाव के धनी हैं जिसकी छाप आपकी रचना बिम्बों में भी परिलक्षित होती है। |

# डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' का महाप्रयाण

कोई कहता है, महाप्रमाण
कोई कह रहा महानिर्वाण
सुमन हो गया, आज निष्प्राण
रहा जो महाप्राण, का प्राण।

किन्तु वह गन्ध, सुगन्ध सुवास,
अनोखी छवि का वह विश्वास,
चतुर्दिक अब भी सबके पास,
प्रकृति का किन्तु यही परिहास,
रहा जो कल तक अपने पास
आज बन गया, वही इतिहास।

कर गया जन जन का परित्राण, सुमन हो गया आज निष्प्राण।।1।।

महाकालेश्वर का तप ध्यान,
चन्द्रिका मइया का वरदान,
अनोखी प्रतिभा का विद्वान,
हो गया देखो, अर्न्तध्यान,
लुप्त हो गयी, मधुर मुस्कान,
यही है विधि का, विधिक विधान।

किया जिसने युग का निर्माण, वही हो गया आज निष्प्राण।।2।।

प्रकृति का यही शाश्वत नियम,
जीव का परब्रह्म से मिलन,
मिलन होता है, परम पुनीत,
यहीं होती आत्मा की जीत,
दुःखी फिर क्यों होते हो मीत
उठो अब गाओ प्रणय के गीत,

यही युग युग का सतत् प्रमाण, सुमन हो गया आज निष्प्राण।। 3।।



तुम्हारा मिला मूक संदेश,
हृदय खिल उठा, न दुख अवशेष,
न मन में शोक, राग न द्वेष,
किन्तु तुम हो गये स्मृतिशेष,
इसी से सिसक रहा उज्जैन,
झगरपुर का सारा परिवेश,
शोक में डूबा हिन्दुस्तान, सुमन हो गया आज निष्प्राण।।4।।
धरा धरती अम्बर आकाश,
रो रहा भर-भरकर उच्छ्छवास,
मालवा की यह मलय समीर,
तुम्हें खोकर हो रही अधीर,
कौन समझे मालिन की पीर,
उसे अब कौन बँधावै धीर
बिचारी सधवा हो गयी राण-सुमन हो गया आज निष्प्राण।।5।।
उसे न जीव ब्रह्म का ज्ञान,
न समझे विधि का कोई विधान,
सुमन से थी, उसकी पहचान,
इसी से है, मालिन हैरान,
शोक में डूबा है, उद्यान,
चमन हो गया आज वीरान,
रो रहा वन उपवन, पाषाण-सुमन हो गया आज निष्प्राण।।6।।



## जीवन परिचय

**स्व० पं० शिवगोपाल जी मिश्र** ग्राम हडहा उन्नाव के मूल निवासी थे। सनेही मंडल मे आपकी गणना होती थी। गया प्रसाद शुक्ल सनेही, जगमोहन नाथ अवस्थी, मौरावाँ के कवि नूतन, हितैषी जी आदि अनेक कवि मित्रों से अति निकट के सम्बन्ध रहे है।

शिव गोपाल जी मिश्र का बहुत समय कलकत्ता में व्यतीत हुआ। कलकत्ता में आपका व्यवसाय था। कलकत्ता की प्रमुख कान्यकुब्ज सभा के श्री मिश्र सम्मानित सदस्य थे।

# धूरि धरसाने की

सत्याग्रह युद्ध विश्व शांति का बनेगा अस्त्र,
पूजा कभी होगी मोतीलाल के घराने की।
गाँधी जी का मान कृष्ण से न कभी कम होगा,
भावना बढ़ेगी मातृ-भूमि पे बलि जाने की।
भारत करेगा गर्व शांति के प्रयोगों पर,
आहों में बसेगी शक्ति विश्व दहलाने की।
तीरथ बनेंगे गोली काण्ड वाले दृश्य सभी,
माथे पर चढ़ेगी कभी धूरि धरसाने की।।
त्यागि धन-धाम भारत कोकिल युद्ध स्थल में,
आई जब राखिवै को लाज हिन्दुआने की।
चिन्ता हुई उनको देखि भारत की दीन दशा,
गुनन मति लार्गी कष्ट याके मिटाने की।
ले के कल झंडा तिरंगा हुई उद्यत में,
बाढ़ी उन्हें चिन्ता सुदृढ़ सैनिक बनाने की।
देखि के पताका मन गोरे भयभीत भये,
काँपि उठी धरती उरि धूरि धरसाने की।।
भारत इतिहास बीच होंगे ये शहीद अमर,
होवेगी प्रशंसा भगत सिंह दीवाने की।
आपस के ऐक्य का बनेगा आदर्श वीर,
पूजा सदा होगी अब गणेश मर्दाने की।
प्रात-स्मरणीय सुखदेव, राजगुरु और,
शेखर, आजाद के अपूर्व बलि जाने की।
सुनेगे सुनावेंगे कहानी सब भारत वीर,
माथे पर चढ़ावेंगे धूरि धरसाने की।।

तिलक करेंगे आज तिलक जवाहर का,
आयेंगे गोखले सु फूल बरसाने को।
बुद्ध सिखलाने को अहिंसा और हरिचन्द,
सत्य युद्धनीति रणभूमि में सिखाने को।
वीर शिवराज भी बजाने को विजय शख,
लाजपत लाज पतवार के चलाने को।
मंगल करन हेतु आयेंगे गणेश वीर
लाल मोतीलाल भी तिरंगा फहराने को।।

## बसन्त

फूलेंगे पलास लाल किशुक अनार जाल
मुदित मलिन्द अरविन्द पै झूलैंगे।
झूलैगे मयूर सुख सारिका कदम्बन पै
लतिका लवंगन की लोनी सब भूलैंगे।
भूलैंगे 'गोपाल' परदेश को जवैया जन
मैन मदमाते शर गात-गात सूलैंगे
सूलैगे कुबोल कोकिलादि कूक-हूक ऐसे
करिहौं कहा मैं अब बसन्ती फूल फूलैंगे
नन्दन बिपिन लागौ छावन रंगीली छटा
शिशिर के कसाले सब बेगि दर भूलेंगे
मंजरित बाटिकान मांहि यों प्रमोद भरे
सारिका कपोतिनि पिकाधि पक्षी झूलेंगे
लागतै बसन्त नव सन्त मन मैन जागे
हूक उपजाए उर पुष्प बाण सूलैंगे
लतिका निकुन्जन में, कुंजन के पुंजन में
ऐ हो ब्रज राज अब चारु पुहुक फूलैंगे

# शुभ होली

सजी रहे मस्तक पर मंगल दायिनी कुमकुम रोली
करो ठिठोली हम जोली में लो गुलाल की झोली
जीतो सत्य स्नेह से जग को सम्बल हो मृदु बोली
शत बसन्त तक मने आपकी रस रजित शुभ होली।

# होली के विविध रूप (वनदायनी होली)

प्रेम प्रकटाय दे जगाय दे स्वदेश भक्ति
भीरुता भगाय क्लेश क्लांति ताप हर दे।
टाल दे कुअंक भाल ज्वाल में जला दे दंभ
द्रोह-मोह-छोड़ छुआछूत चूर कर दे।
अंशनाश कर दे आततायियों का बेगि अंब
विश्व जयति खंभ फेरि प्राग माँहि घर दे
कर दे निहाल हाल भाषत 'गोपाल' बाल
अधिक न मांगू होलिके तू यही वर दे।



**सत्तावनी क्रान्ति के पुरोधा राना बेनी माधव सिंह के समकालीन कवि श्री बच्चू लाल का वह छन्द जिसे बैसवारे में सुधीजन प्रायः दुहराते हैं।**

देखि अग्रेज की भारी सेन, बम्ब फौज,
भागि कै तिलंगन ने अपनी गली लई।
वीर शिवरतन सिंह लै के शमशेर हाथ,
समर मा जूझि गयो, कीरति भली भई।
चन्दा पति हिन्द पाल, लाल माधव, रघुनाथ
अच्छा कै निगोड़े सबै पीछै कै दगा दई।
कहै बच्चू लाल नाक कटी सब राजन की,
वीरता अकेली संग राना के चली गयी।।

*संकलित*- **जयवर्धन सिंह**



## जीवन परिचय

नाम : पं० शिवधार मिश्र 'अवधूत

पिता का नाम : स्व० रामचरन मिश्र, रूपरानं

जन्म स्थान : ग्राम-हुलासी खेड़ा, पो० बिह

शिक्षा : हाईस्कूल

प्रकाशित कृतियाँ : 1 राव रामबक्स सिंह बावन
2 'आराधना के स्वर' कविता
3. जीवन वंशी (2002)

: इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-
तथा 'आकाशवाणी' केन्द्र ल

: स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परि

: 'गूंज-अनुगंज' साहित्यिक सं
अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मा

सम्प्रति : 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भव
साहित्य-साधना एवं समाज-

# जीवन

जीवन क्या है ? कभी न जाना
पथ अनजाना चलते जाना
मै राही हूँ चला अकेला, चला अकेला।
पथ मे अगणित फूल मिलेंगे, फूलों में भी शूल मिलेंगे,
अनुकूल कूल प्रतिकूल मिलेंगे, झंझावात झमेला,
मैं चला अकेला .. .....
वीर धीर गंभीर भी होंगे, गुरु कलदर पीर भी होंगे
पैदल शाह वजीर भी होंगे, निमिष मात्र का मेला।
मैं चला अकेला।। ........
शाहंशाह फकीर हुआ क्या ? शाहजहां जहांगीर हुआ क्या ?
राणाप्रताप हम्मीर हुआ क्या ? कोई गया दुकेला।
मैं चला अकेला।। ........
धूप कहीं है छाव कहीं पर, प्यार कहीं है, दुराव कहीं पर,
मेरा तेरा भाव कहीं पर, अवधूतों ने झेला।
मैं चला अकेला।। .......

# ग़ज़ल

किसी को भी कभी मैं दम दिलासा दे नहीं सकता,
किसी सूरत में कोई गैर झांसा दे नहीं सकला।
ये माना दिल बहुत रोये तुम्हारे नाम पर,
मगर अफसोस यही सर्द नाला दे नहीं सकता।
बहुत ही दूर मंजिल हो तपिश से जान बेकल हो
कभी सामा सफर हम राह हर्गिज ले नहीं सकता।
सनम के आस्ताने के कयी है रास्ते हम दम।
इसी से मैं कोई तसबीह माला ले नहीं सकता।

हबिस में जिन्दगी की खूबियां सब साफ कर बैठे,
रहम कर दो दुआ मांगू हिकारत ले नहीं सकता।
है बहुत रिन्दाना सोहबत और तोहमत भी नहीं कुछ कम,
अपनी चाले फेर अशरफ कोई फतवा ले नहीं सकता।

# अब किससे कहें ?

आये हैं अभी कुछ देर रुकें, कुछ बात करेंगे चल देंगे।
बारात निकल आगे है गयी, कुछ साज सुनेंगे चल देंगे।।
वेरहम जमाना सुन न सका, पुर दर्द हमारा अफसाना।
अब किससे कहे और कौन सुने, खामोश रहेगे चल देंगे।।
यह कैसी मोहब्बत कैसी अदा, यह कैसी अदावत कैसी सजा।
जज्बात भरा दिल टूट गया, अरमान लुटेंगे चल देंगे।।
बेनूर है गुलशन फूल नहीं, हर सिम्त है कांटों की महफिल।
अपने तो चुभन के आदी हैं, कुछ खार चुभेंगे चल देगे।।
रिश्ते हैं सभी मंजिल से नये, उम्मीदें वफा किससे 'अशरफ'।
साहिल न सही तूफां ही सही, मौजों पे मचल के चल देंगे।

# राधा (कवित्त)

सुकुमारिहि सूरति कुन्द कली, वृषभानु लली पगली धुनिधारिका
कुंजथली गली सांकरी धूमि, चली मुद झूमि मयंक कुमारिका
अवधूत मलिन्द मयूर चकोर लजे, तेहि ठौर मृगी सुकसारिका
बानि का साधि प्रदायिका मोक्ष, परोक्ष अराधिका साधिका राधिका
ब्रह्म अरूप तुलै कित कान्ह रहौ निज नाह बनी परिचारिका।
प्रेम पयोधि सनेह अगाध तरी, रही बूड़ि परी अवगाहिका।।
भेद अपूरब यो अवधूत, सधी सुधि सांस उसासन साधिका।
धारिका प्रीति प्रतीति निबाहिका, राधिका श्याम है, श्याम ही राधिका।।





## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **शीलेन्द्र कुमार सिंह चौहान** |
| पिता का नाम | : | ब्रह्मा सिंह चौहान |
| पता | | ग्राम– दादूपुर, पो०– बन्थरा, जिला लखनऊ |
| जन्म | : | 15 7 1955 |
| सम्प्रति | : | उपजिलाधिकारी– बीघापुर, उन्नाव |
| प्रकाशन | : | 1. टूटते तिलिस्म (गीत संग्रह), |
| | | 2. तपती रेती प्यासे संख (गीत संग्रह) |
| | . | अनेक पत्र–पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित। |

# आग उगलती सदी मिली

वृक्ष मिले अपने फल खाते, पानी पीती नदी मिली
जाने क्या हो गया समय को, आग उगलती सदी मिली

सूरज और चाँद के घर में,
बारूदों के ढेर मिले।
कागज़ की तलवार हाथ में,
लिये काठ के शेर मिले।
सरकन्डों की राजसभा में, झुकी छाँव बरगदी मिली।

राम भरोसे मिली व्यवस्था,
पत्थर मिले दूध पीते।
अजगर सोते मिले महल मे,
केहरि टुकड़ों पर जीते।
कुटिया की खोटी किस्मत को, पग पग पर त्रासदी मिली

शीश कटी देहों के आगे
भाषण देते लोग मिले।
धनवन्तरि की काया मे भी,
लगे भयानक रोग मिले।
इतना हुआ बेरहम मौसम, नेकी माँगी बदी मिली
जाने क्या हो गया समय को, आग उगलती सदी मिली।

# जीवन में यह जान न पाया

जीवन में यह जान न पाया।
कलियों को मुस्काते देखा
फूलों को भी हँसते देखा।
पर इतनी सुन्दरता में भी,
काँटे हैं पहचान न पाया।
जीवन में यह जान न पाया।
चन्दन बन शीतल लगते हैं,
मन को वे पल-पल हरते हैं।
पर उनके तरुओं में लिपटे,
विषधर का मैं ज्ञान न पाया।
जीवन में यह जान न पाया।

रवि किरणों को उगते देखा,
उजियारे को बढ़ते देखा।
पर ढलने में छिपे हुए मैं,
अँधियारे अनुमान न पाया।
जीवन में यह जान न पाया।
अम्बर में बादल उड़ते हें,
जीने को वे जल देते है।
लेकिन छिपी हुयी बिजली का,
मैंने किंचित भान न पाया।
जीवन में यह जान न पाया।
अपने तो अपने लगते हैं,
सुन्दर से सपने लगते हैं।
पर इनसे घर आग लगेगी,
समझ कभी नादान न पाया।
यह जीवन में जान न पाया।

## गीत

नावों मे सूराख नदी के
        दिन अलबेले है,
खड़े राम जी सरयू तट पर
        निपट अकेले हैं,
पार उतरने की जिद मन मे
        ठाटें मार रही,
मौसम को जाने क्या सूझी
        उल्टी हवा बही,
मंजिल को पाने में दिखते
        बड़े झमेले हैं।
छोटी हो या बड़ी भॅवर हो
        सबके मुह फैले,
चंचल चाल. बदन कोमल
        पर अंतरतम मैले,
मांस नोचते घूम रहे
        मगरों के हेले हैं।
वे क्यों डरें विश्व में जिनका
        बाज चुका डका,
पल में उतरे सिधु जीत ली
        रावण की लका
सौ-सौ वार समय के पहले
        से ही झेले हैं।

## गीत

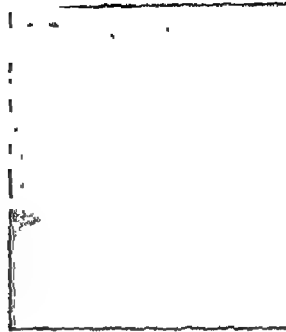
ऑखो में
कौंध रहे
सपने आकाश के,
आवो हम जला धरे
दीपक विश्वास के।
                सत्कर्मों
                की बाती

अंधियारा
दूर करें
हम अपने गेह का,
पांवों में चुभे नहीं
कांटें संत्रास के।

दमक उठे
मुन्डेरा
दमक उठे द्वार,
सूरज भी
शीश झुका
स्वीकारे हार,
जीवन की बगिया मे
फूल खिले आस के।
आवो हम जला धरें
दीपक विश्वास के।

# गीत

तन शहरी मन हुये जंगली
आंखों पर चश्में रंगीन,
हवन जिन्हें करना था वो भी
बजा रहे सुविधा की बीन।
दोष नहीं था आंखो का पर
पतझड हुए बसती सपने
बो बो गये
राह में कांटे
समझा जिन्हें किया हम अपने
मुँह से शिव शिव बोल रहे पर
हाथों में पकड़े संगीन।
परखा जिन्हें मिले वो खोटे
चमकदार कहने भर को थे,
देखा न पाये
शकल स्वयं की
हाथ थमे दर्पण यूं तो थे,
आग लगा बैठे घर अपने
मति ले गया विधाता छीन।
ये तो वे नीयति के खोटे
पर था राजयोग हाथों में
कहने भर को थे दधीचि पर
स्वार्थ भरा था जजबातों में
ऊँची ड्यौढ़ी, घर कुबेर का
अनगिन द्वार खड़े थे दीन।
हवन जिन्हें करना था वो भी
बजा रहे सुविधा की बीन



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **डॉ० सूर्यप्रसाद शुक्ल** |
| जन्म | : | 10 जनवरी 1936 |
| पिता | : | स्व० शिवदास शुक्ल |
| पता | : | ग्राम दुन्दपुर, रुझेई, जिला उन्नाव |
| योग्यता | : | एम.ए., पी-एच्.डी., साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न |
| प्रकाशित साहित्य | . | 1 गीतीविहास में ये गीत- अखिल भारतीय शोध समीखा पुरस्कार प्राप्त अम्मिला, अभिधायिनी, हिन्दुइज़्म दि युनिवर्सल फेथ |
| भाषा ज्ञान | : | हिन्दी, अंग्रेजी |
| रुचियाँ | . | समीक्षा, समालोचना, लेखन, पठन |

# दिव्य दृष्टि दर्पण में कौन है

आकर्षित अपनापन जिसमें
ऐसे आकर्षण में कौन है ?
दिव्य दृष्टि दर्पण में कौन है ?
उर अदृश्य अर्पण में कौन है ?
स्नेह शुचि समर्पित है हो रहा
स्नेह शुचि समर्पण में कौन है ?
वैसे तो संघर्षण ही जीवन है,
शाश्वत संघर्षण में कौन है?
पावसीय वर्षण में कुछ भी हो
दृष्टि वृष्टि वर्षण मे कौन है ?
दरस परस से कोसों दूर जो
ऐसे स्पर्शण में कौन है ?
दिव्य दृष्टि दर्पण में कौन है ?
उर अदृश्य अर्पण में कौन है ?

# आप पहचानिये

आप हमसे न पूछें कि हम कौन हैं ?
आपके पास हैं आप पहचानिये
आज से ही नहीं जन्म के पूर्व से
आपके खास हैं आप पहचानिये।
रूप रूपान्तरित तो हमारा हुआ
पर प्रकारान्तरण अन्तरण में नहीं
सम्वरण में समानान्तरण है शुभम्,
है कोई आवरण आचरण में नहीं
आप चाहें तो छूकर हमें देख लें,
हम तो आकाश हैं, आप पहचानिये
जोहते-जोहते भी बहुत दिन गये,

खोजते-खोजते आप तक आ गये
आप पाकर भी हम को नहीं पा सके
जाने हम कैसे हैं आपको या गये।
हम लगातार ही कह रहे आप से
हम तो विश्वास है आप पहचानिये
हम तो विसरे नहीं आज तक याद हैं
पर हमें आपने तो है बिसरा दिया
बस उसी से हैं परिचय लगे पूछने
आज तक आपके ही लिये जो जिया
चल रही जो निरन्तर है हर एक में
हम वही सांस हैं, आप पहचानिये।
हम रहे होंगे पतझर भले ही कभी
अब तो मधुमास हैं आप पहचानिये।

## बात न पूछो

रात न जाने कैसे बीती
रात की कोई बात न पूछो
किसने हारी किसने जीती
बाजी की कुछ बात न पूछो।
नूपुर की रुन-झुन रुन-झुन में
सुध-बुध कुछ खोई-खोई सी
पगलाई सी बौराई सी
नींद निरी सोई-सोई सी
गूंगी जीभ कहे कुछ कैसे
ललिता लगन लगी फांसी सी
बीथि-बीथि विपरीति चल रही
मलमानिल जो रही सर्वदा
गई रैन रीती की रीती
कैसे मिला प्रभात न पूछो।

उतरा नहीं नशा है अब तक
बांह न थामी किसी निशा ने
दिया उजाड़ व्यर्थ जाने क्यों
सदियों का घर बसा किसी ने
ऐसे असमय में भी कोई
मिला नहीं साथी संघाती
रहा भटकता भ्रमित पथिक सा
दिया न कोई दिशा किसी ने
उलझ गया झलबेली वाले
कांटों में अनदेखा आंचल
रुचि घुट-घुट विष पी-पी जाती
पीड़ा का अनुपात न पूछो।
कैसे कोई बात कहें हम
बैठी संसृति कान लगाये।
फेंक कंकड़ी मानस सर में
सोती सुधियां कौन जगाये।
दूर कहीं से निर्ध्वनि ध्वनि में
मौन किसे इंगित कर जाये
व्यर्थ अकारण बोझिलता की
सोती सुधियां कौन जगाये
हुई अपरिचित मुझसे ही तो
मेरी परिचित परछाईं भी
जीती सुधि फिर-फिर अनजीती
पाई कहाँ निजात न पूछो।।
रात न जाने कैसे बीती
रात की कोई बात न पूछो
किसने हारी किसने जीती,
बाजी की कुछ बात न पूछो।

# तुम हो कौन

अप्रतिमें प्रतिमें तुम हो कौन
गगन, गिरि-गरिमें तुम हो कौन
अपन्हुति, अतिशयोक्ति, व्यतिरेक
सांख्यरूपक, वक्रोति, विवेक
यमक, अनुप्रास, श्लेष
अद्वित उत्प्रेक्षा रूपक रंग
पदों में रति स्थायी भाव
अनुपमें उपमें तुम हो कौन!
विभावन काव्य लिंग अन्योक्ति
यथावत साख्य ललित लोकोक्ति
निरूपित वर विधान द्रष्टव्य
अलंकृत आलम्बन गन्तव्य
भ्रांति सन्देह स्नेह सानिध्य
सुवासित सुषमें तुम हो कौन!
नयन संधानित काम कटाक्ष
मत्र मुग्धित प्रतीक नयनाक्ष
प्रफुल्लित त्रिवली रूपी लता
अजित यौवन उपवन स्मिता
क्षीण कटि उलझी त्रिवली में
अरे ! तुम अगमें महिमें कौन ?
अप्रतिमे प्रतिमे तुम हो कौन,
गगन गिरि-गरिमे तुम हो कौन।।

○ *सूर्यप्रसाद शुक्ल*

# सारगर्भित सौन्दर्य स्वरूप

रत्न रंजित रूपसि का रूप
सार गर्भित सौन्दर्य स्वरूप
हो गया यह कैसा आश्चर्य, भरा भू में अपूर्व ऐश्वर्य
अवनि में सुन्दरता का सार, चकित जिसमें सारा ससार
किया विधि ने कैसे एकत्र, विचरती सुधराई सर्वत्र
शून्य से निकल पडी आवाज, राधिका मूल कृष्ण हैं व्याज
देखकर मूर्च्छित हुआ मनोज, श्याम सौ बार हुए बलिहार
धरा पर गिरा मयूरी ताज, मूर्छित हुए कृष्ण नटराज
मुग्ध जिस पर त्रिभुवन पति आज वही उनकी माया का राज
गोद में लिए रहूं दिन रात, नायिका राधा पद जल जात
कामना यही शेष अवशेष, याचना और न कोई विशेष
कृष्ण जिस पर हो गये विमुग्ध, वही बस अनुपम रूप अनूप।
रत्न रंजित रूपसि का रूप, सार गर्भित सौन्दर्य स्वरूप।



---

ये नाम केचिदिह पृथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला चं पृथिवी।।

जो कोई भी मेरी अवज्ञा का प्रणयन कर रहे हैं क्या वे यह जानते हैं मेरा यह (ग्रन्थ) उनके प्रति अवज्ञा (को दूर करने का) यत्न नहीं है। मेरे समान धर्म वाला कोई तो पैदा होगा ही जो यह विचार करेगा कौन क्या था क्योंकि यह काल निरवधि है पृथ्वी विपुला (विशाल) है।

*सकलित*- **अर्चना सिंह**

---



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | सूर्यप्रसाद द्विवेदी (काका बैसवारी) |
| जन्म | : | 15 मार्च 1933 |
| पिता | : | स्व० गंगाधर द्विवेदी |
| पता | : | ग्राम पो. अकवाबाद, उन्नाव |
| प्रकाशित कृतिया | : | बैसवारा समर (खड काव्य) |
| | : | समय की पुकार (हास्य व्यंग्य) |
| | : | मतवाला मोहन |
| | | रावराम बख्श सिंह (उपन्यास) |
| | : | बैसवारा केसरी (नाटक) |
| | : | अवध में राना (नाटक) |
| | : | खिसकढ़ी (हास्य व्यग्य) |
| | : | बेल बाटम (हास्य व्यंग) |
| | : | धरती की पाती (लोकगीत) |

# पाती

तुम तो पिया परदेश सिधारे, सकरे मा जियरा हमार।
एक तो गरीबी, दूजे मंहगाई, तीजे बड़ा परिवार
कोऊ पर ॲतरे घिनोहरी-सा ल्वाटै,
कोऊ झझकोरि पाय चुटकिन काटै।
कोऊ केहे किक्क भिक्क खोपरी का चांटै
कोऊ पेटे पकरि कै नहनब क्वाटै
कोऊ परे खटिया, छमाही ते घ्वाटै
उतरै न जूडी-बुखार।
तुम तो पिया परदेश सिधारे, सकरे मा जियरा हमार।
रहि-रहि बिजुरी बदरवा ते चमकै,
जिया घबड़ाय कउंधा लप-लप लपकै।
झुकी है अंधेरि राति पलक न झपकै।
टुटही मड़इया मोरि टप-टप टपकै।
पिपरा के पात लड़ै पिछवारे, छापे गड़इया मोहार।
तुम तो पिया परदेश सिधारे, सकरे मा जियरा हमार।
छाई हरियारी खडे बिहसै सँवनवा,
तकि बांव मेल खेत जोतत किसनवां।
झुलुआ झुलावैं सखी अपना ललनवा।
पाती के पढ़त घर आओ हो सँजनवां
धरती मिली बांटे, करिबै किसानी
दाना तो भरिबै बखार !
तुम तो पिया परदेश सिधारे, सकरे मा जियरा हमार।
भवा है विकास, नीक लाग रहा गाँव।
नीम तरे जूड-जूड, मन मोहे छाँव।
डारन-डारन कउवा, करैं काँव-काँव।
चिरई पलइयन मा, करै च्यांव-च्यांव।
थल कुर ऊपर बइठीं, पखना ओढ़ाये।
पूतन का स्यावै संभार,
तुम तो पिया परदेश सिधारे, सकरे मा जियरा हमार।

# रास

खड़ी अपने श्याम के साथ गुजरिया,
रास करे खरिहानन मा।
झुकि झूम-झुकावत माथ,
गुजरिया रास करे खरिहानन मा।
सर-सरर-सरर पछुवा सरके,
फर-फरर-फरर चूनर फरके।
कटि मटक-मटक मटकाय टोकरिया,
रास करे खरिहानन मा।

खड़ी अपने श्याम के साथ गुजरिया,
रास करे खरिहानन मा।
खन खनन-खनन चूड़ी खनके,
झन झनन-झनन, पायल झनके।
सन सनन-सनन ठाढी दुपहरिया
रास करे खरिहानन मा।
गेहुवन की रास परी पसरी,
छिरकै थिरकै चटरी-मटरी
मलुआय भरे अठिलाय गठरिया,
रास करे खरिहानन मा।

खड़ी अपने श्याम के साथ गुजरिया,
रास करे खरिहानन मा।
माथे पर बूद पसीना के,
मेहनत कस भाग्य नगीना के।
घूंघट मे चमके नयन पुतरिया,
रास करे खरिहानन मा।
खड़ी अपने श्याम के साथ गुजरिया,
रास करे खरिहानन मा।
झुकि झूम झुकावत माथ गुजरिया,
रास करे खरिहानन मा।

# दहेज

लाखन रुपिया मागैं दहेजु, सामान गिनावैं खोजि-खोजि।
अग्रेजी चला बफै सिस्टम, हिन्दी मा मानव कुकुर भोज।।
एकुई तस्तरी मां पूड़ी चटनी, साग रायता रसगुल्ला
नमकीन मिठाई पंचगब्य अस, खाय रहे खुल्लम खुल्ला।
बिन हाथ जूता पहिने खा रहे, खड़े मिस्सी रोटी
शाकाहारी तस्तरी बीच, रखी मांसाहारी बोटी
कुदुआ अस कूदि परे आगे, चमचा ते चमचा लड़ै लागि
बलगरि हुरियाय घुसैं आगे, नीबरि पीछे का लेय भागि
केतनेव के कपड़ा लाल पेरि, केतनेव गुस्सैमा लाल पेरि
केतनेउ खाली तस्तरी लेहे, दुरिही ते घुड़रै हेरि-हेरि
चउगिर्दा मची बैल हाई, जी बूढ़ि-बूढ़ि बाहेर भखुरै
आगे चारा पीछे पानी, तीन्हें गिलास अगरै पछरै
कुछ खडे जनाती देखि रहे, लड़िका वालेन की हुरमुट्टी
आपस मां परसौ खाव मरौ, बिटिया वाले पायिन छुट्टी।
कुछ साथै गयी औरतैं हैं, लडिका बच्चा तै छिक्क, फिक्क
उई नाचै साथ बरातिन के, लरिकवा मचाये किक्क भिक्क
उनके सब बाप खेलाय रहे, बेलमाय रहे दयि दयि टाफी
जब खाना पानी मिला नहीं, तब बोलीं काफी की काफी
लड़िका करिहांव भटकि नाचै, रुपिया लूटैं बाजा वाले
खून पसीना एक करैं, बोतल झूमैं, ऊंचे खाले।
मटकत-मटकत कपड़ा फाटे, तनमन धन की बरबादी है
माटी मा परे-परे गावैं, मेरे यार की सादी है।
जैमाल लेहे वह खड़ी, लोफरवा सीटी दै पीटैं तारी
जस कौरव बीच द्रौपदी ठाढ़ी, पांडव मानि रहे हारी।
कैमरा मैन दुस्सान अस, आगे पीछे खींचै सारी

घूघट उघारि नथुनी संवारि, फोटौ खीचैं बारी बारी।
है बाप भाई मजबूर खड़े, मर्यादा के हौसला पस्त
ध्वनि बाजा वाले बजा रहे, तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त।
जो लाक लाज के बीच पली, माता की मर्यादित बिटिया
सैकड़ों बराती आखिन ते, सेकैं जस आलू की टिकिया
एडवान्स फेमिली देखि-देखि, पछिताय रहे ठाढे करका
जब बैण्ड बजाकर, समधी जी समधी के घर डारैं डाका।

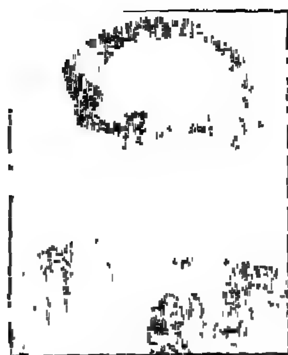


# श्री गंगा स्तुति

*ब्रह्म के कमण्डल की शोभा सरसाती हुयी,*
*तारने को करती इसारा चली आती है।*
*भगीरथ के तप से प्रभावित है भागीरथी,*
*मानव के स्वर्ग का सहारा चली आती है।*
*हरि चरणामृत पिलाती हैं अवनी तल को,*
*आश्रितों को देती सुख सारा चली आती हैं।*
*आरा लिये अधमों को दुधारा दलितों के लिये,*
*पारा सी धवल गंगधारा चली आती हैं।।*

*वेद के भेद न जाने कछू*
*न सुपन्थ में कबहूँ पगधारे।*
*संगत संतन की न करी,*
*न कुसंगति से कबहूं रहे न्यारे।*
*मातु विचारि के आपन दास,*
*क्षमा करिहैं अपराध हमारे।*
*भागीरथी हम दोस भरे,*
*पर भरोस वही कि परोस तुम्हारे।।*

*संकलित* - सौभाग्यवती वन्दन



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | . | **प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित** |
| जन्म | . | 6 जुलाई 1938 (फाल्गुन, कृष्ण 8. सं० 1999) |
| पिता | : | स्व० पं० भगवती प्रसाद दीक्षित |
| वर्तमान पता | | 'साहित्यिकी' डी०-54 निराला नगर, लखनऊ |
| गाँव का पता | : | बभावों (वाया-बछरावाँ) रायबरेली। |
| शिक्षा | : | पी-एच.डी., डी.लिट् |
| प्रकाशित कृतियाँ | : | 56 शोध समीक्षा ग्रन्थ, लगभग 450 निबन्ध। सम्प्रति 5 कृतियाँ प्रकाशनाधीन |
| पुरस्कार | : | साहित्यभूषण (उ० प्र०) साहित्यवाचस्पति (हि०सा० सम्मेलन, इलाहाबाद) तथा अन्य अनेक शोध निर्देशन- 86 |

# धरती अपनी है तो आकाश हमारा है !

अन्तर की प्यास छिपाये दिल की धडकन में,
सावन का रिमझिम नयनो मे छा जाता है।
कजरारी अमावस पर अठखेली करती
तो पूनम का चॉद कभी मुस्काता है।
पतझर से जी भर आँख मिचौनी खेल चुके
तो चिर नूतन स्वर्णिम मधुमास हमारा है।।

सागर ने बाडव की ज्वाला में सुलग सुलग
शीतल किरणों से चित्र बनाना सीखा है।
छाती में पगली दुनिया का परिहास छिपा
शशि ने हंसकर अमृत बरसाना सीखा है।
उच्छवासों के क्रन्दन मे सरगम का स्वर है।
तो तूफानों में बढ़ने का विश्वास हमारा है।

दुनिया तो मातम में रोना ही सीख सकी,
पर मेरे द्वार सदा सहनाई ही बजती।
वह नीप-मुकुल सोता हो नींद चिरन्तन पर-
मेरे उपवन की सोमकली खिलती रहती।
मरुथल भी मधुवन बन जब रास रचायेगा-
तो मानूॅगा सच्चा सन्यास हमारा है।।
धरती अपनी है तो आकाश हमारा है।।

# मैं चला हूँ गहन तम से ज्योति-रेखा खोज लाने !

जिन्दगी की हर लहर तूफान ही है,
राह की हर कंकड़ी भगवान ही है।
इस निराशा के तिमिर में बुझ गया है-
दीप और मंजिल भी अभी अनजान ही है।
आज स्वासों से नई गति मिल रही है।
टूटती जब सांस मिल जाते ठिकाने।।

प्रेरणा की मूक ध्वनि जब अलस पलकें खोलती है,
साधना रोकर हृदय के आर्त्त स्वर में बोलती है।
चिर व्यथा से मुक्त वाणी कल्पना के गीत-
गुनगुनाती, जिन्दगी को ऑसुओ से तोलती है।
ठोकरे खाकर डगर पर बढ़ रहा हूँ-
जिन्दगी पर नई आशा किरन पाने।।

चू पड़े ऑसू कि घन ने गरज कर बूँदे गिराया,
मुस्कुराये जव अधर तो चॉद कितना मुस्कुराया।
हंस रहा हूँ इसलिये तो सूर्य को आभा मिली है।
खिल उठी है जिन्दगी तो आज ये कलियॉ खिली हैं।
ऑस में है प्रलय तो हर सॉस में ही सृष्टि मेरी-
जा रहा हूँ आज मरघट पर नया जीवन बसाने।

मैं चला हूँ गहन तम से ज्योति रेखा खोज लाने !

# अभी मेरी कहानी ही अधूरी है !

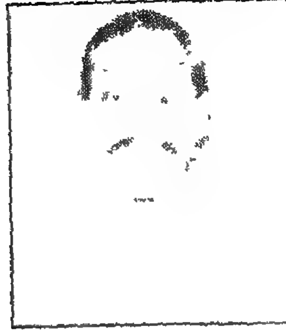
मेरी ऑखो में सोती रहती कजरारी रात है,
मेरे अधरो पर भी खिलता रंग-रंगीला प्रात है;
मेरी सॉसों में अँगड़ाई लाती रहती आंधियॉ-
मेरी पलकों में उफलाती सावन की बरसात है।
ताराओ के दीप जलाकर ढूँढ रहा, पर---
अनकही मेरी निशानी ही अधूरी है।।१।।

मेरी यह धरती समाधि है और कफन आकाश है,
इन चरणों में भी मंजिल पर बढ़ने का विश्वास है;
मेरी छाती में बड़वानल, ऑखों में सोता सर्जन-
किन्तु तीसरी पुतली में मडराता पूर्ण विनाश है।
जलती जाती दीपशिखा की चिता मगर-
अधखिली मेरी जवानी ही अधूरी है।।२।।

मेरे पग की धूल फूल बनकर करती सिंगार है,
मेरी सांसों से रह-रहकर बजता रहा सितार है,
निंदियारी इन पलकों में कंवट लेता तूफान है-
मेरे खारे आँसू से भी झरता रहा अगार है।
अभी प्राण मे सांस, सांस में प्यास शेष है-
क्योंकि पगली जिन्दगानी ही अधूरी है।।३।।

# पावस की पहली बूँद

उमड़ घुमड़ कर देख बदरिया छाई रे।
धरती पर पड़ी फुहार पपिहिरी हुई मगन,
स्वाती की प्यासी 'पिउपिउ' की कर रही रटन,
फिर फिर कर बादल बरस रहे रिमझिम रिमझिम-
पर कब फुलझड़ियो से धरती की मिटी जलन !
देखो, झर झर झरती बूँदे फुल-बगिया में-
मदमत्त मयूरी कुहुक कुहुक हरषाई रे !।।१।।
कौंधा चमके ये घटा- टोप छाये बादल,
उड़ आया बेपंख किसी बिरहिनि का काजल,
आज अंगनवॉ चौक न पूरो अरी सुहागिन,
धन-खेतों में देखो बजती छम छम छागल !
'गगरी छूँछी बैल पियासे काले मेघा,
पानी 'दे' गलियरवा से ध्वनि आई रे ।।२।।
यह पावस की बूँद गगन का पहला चुम्बन,
व्योम, धरा का मिलन आज हो रहा चिरन्तन;
घर घर बरगद की डरिया पर झूलन झूलें-
पुरवइया बह रही है सखीरी, आया सावन !
कौन बिरहिणी आचल मे बाँधे तरुणाई
''मोरे कन्ता गये विदेश' कजरिया गाई रे ! ।।३।।
बरस बरस कर बूँद चूमती रही किनारे
उफलाई सरिता, पर घायल हुईं कगारें,
हरी हरी चुनरी ओढ़े है प्रकृति सुहागिन,
देखो, दुलहिन धरा सलोना रूप सॅवारे।
चित्रकूट के विधुर यक्ष की अरी दूतिनी !
किस अलका का यहॉ संदेशा लाई रे ?।।४।।



## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | **त्रिभुवन सिंह चन्देल "स्वच्छन्द"** |
| जन्म | : | 5 जुलाई 1950 |
| पिता | : | श्री कुशाल सिह चन्देल |
| माता | : | श्रीमती सौभाग्यवती चन्देल |
| पता | : | ग्राम- गलगलहा, म० नं० 202, हिरन नगर, उन्नाव |
| फोन नं० | : | 2823315 |
| अस्थायी पता | | ग्राम-पाल्हेपुर (आड़ाखेरा) तहसील-बीघापुर, उन्नाव |
| शिक्षा | : | विधि स्नातक (बी.ए., एल्-एल्.बी.) |
| व्यवसाय | : | कृषि, वकालत, काव्य सृजन |
| रचनाकाल | : | 1970 से अब तक |
| काव्यकृतियां | : | रचनायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। |

# बसन्त वर्णन

अमित आनन्द अतिशोभित दिगन्त हुए
वन उपवन भी निराले सजे आज हैं
कोकिल, कपोत, शुक, सारिका, मयूर, वृन्द
गाते नृत्य करते ये विहग समाज है
कूप, सर, सरितायें निर्मल नीर लिये
गिरिगण शीश पे संवारे हिमताज हैं।
प्रकृति के द्वार बन अतिथि सुरूप वर
पालकी प्रसून चढ़ि आये ऋतुराज हैं।

प्रेमी अलियों ने गाल कलियों के चूम-चूम
अधरों का रसपान कर किये लाल हैं
चंचल तितलियां भी साथ रह सुमनों के
पूछ रहीं आपस में प्रेम के सवाल हैं।
प्रिया लताओं को समेटे तरु निज अंग
मन्जु मन्जु मन्जरी मे मंडित रसाल है
छाया हर ओर व्योम जल थल मधुमास
फैले 'स्वच्छन्द' सब बसन्त के ही जाल हैं।

फूले हैं गुलाब, गेंदा, गुलाबास, गुड़हल
गुलावली, गुलदोपहरी गुलनार हैं।
फूले कहीं चांदनी, चमेली चम्पा के फूल
बेला, रातरानी, केतकी 'औ' मन्दार है।
केलियां, कदम्ब हैं अनार, कचनार फूले
केवड़ा, कनेर जो करील कांटेदार है
जूही, मुर्गकेशी, गुलखैरा, गुलमेंहदी फूल
फूलों की बहारें "स्वच्छन्द" बेशुमार है।

# वर्षा ऋतु और सावन

नाद करि झुकि मेघ चूमते धरा का मुख
सुख-गीत मोर शोर करके सुना रहे
शीतल बयार संग पडती फुहार अंग
सावन सुहावन के दिन मन भा रहे
काली-काली घटा से डटा है लटा तम-तोम
दिवस उजाले भी अंधेरे में समा रहे
बरसात न अघात सांझ, रात या प्रभात
बादल हो पागल बरसने को आ रहे।

सावन पिलाता भंग झूमता अनंग संग
नारियों नरो में जोश दिखता जवानी का
घर-घर में उमंग प्रेम की उठे तरंग
शान मान है गुमान इन्द्र राजधानी का
मेघ जल बरसाते किसी को न तरसाते
भक्त जपै नाम नित्य शंकर-भवानी का
"स्वच्छन्द" आनन्द से भरे हैं सब दिगन्त
मदिरा के तुल्य नशा सावन के पानी का

सावन मे उल्लास मन उनका उदास
जिनके पियारे पिया बसे परदेश में
मेंहदी का रंग नहीं सोहता हथेलियों पे
जलती जवानी सब विरह के क्लेश में।
सुमन की छुअन भी चुभती है शूल सम
फैली हरियाली लगै विपदा के वेप में।
सोलह शृंगार खलते हैं बन अंगार
घर में न जब पिया मौसम विशेष में।

## छन्द (घनाक्षरी)

### ॐ शारदाय नमः

विद्या कला काव्य स्वर संगीतदायिनि मां
कर दे दया की वृष्टि नेह से निहार दे
दास उर कर वास प्रतिशब्द दे विकास
कर के विकार दूर सुयश निखार दे।
भावों में भरदे उमग रंग नव तरग
मन्द काव्य सरिता की गति को उभार दे।
ज्ञान बुद्धि सरिता की गति को उभार दे।
सुन "स्वच्छन्द" की विनय हे मातु शारदे।

### ॐ नमः शिवाय

माथे छावे बाल चन्द्र तन में लगाये भस्म
गिरि कैलाश पर विराजे पिये भंग हैं।
नीलकण्ठ में भुजंग पमहादेव शीश गंग
मन में बसाये राम नाम की तरग हैं।
हाथ एक डमरू दूसरे हाथ में त्रिशूल
जगत की जननि भवानी बाम अग हैं।
बैठे सुत निकट गजानन, षडानन भी
नन्दी बूढ़ा बैल और भूत प्रेत सग हैं।

### ॐ दुर्गाय नमः

आदि शक्ति दुर्गे माँ दुरगति नाशिनी हो
भक्तो के हृदय मध्य अम्ब सदा वासिनी
दानव दैत्य असुर संहारे युग-युग मातु
सुर नर मुनियों में धर्म की प्रकाशिनी।

तीनो लोक भय मुक्त आपकी कृपा से देवि
जगत के भरण समृद्धि की विकासिनी
पूत "स्वच्छन्द" को दो चरण शरण अम्ब
हर सुख सम्पदा दो सिंह पीठ हासिनी

## जय श्री राम

हरे राम राम राम दशरथ पूत राम
राम राम राम राम कौशल्या दुलारे हो
राम राम राम राम भरताग्रज राम
राम राम राम राम लखन के प्यारे हो
राम राम राम शत्रुहन के वात्सल्य राम
राम राम शिव, हनुमान के सहारे हो
राम राम राम जानकी के प्राणनाथ राम
"त्रिभुवन" रक्षा हेतु धनुबाण धारे हो।



कवि घाघ की तरह बैसवारे के प्रसिद्ध कवि आत्मदीन जी हैं। उनकी एक त्रिफला में- बैसवारी, भाषा, परम्परा व नीति चित्रण द्रष्टव्य है।

तीन तीन की बातैं बीन। नीचे लिखता आतमदीन।।
कोही, मोही, द्रोही तीन। इनसे भाग्यो आतमदीन।।
चाली, जाली, झाली तीन। पास न बैठ्यो आतमदीन।।
रोगी, सोगी, योगी तीन। देखन जायो आतमदीन।।
धन, धरती, युवती ये तीन। झगड़े के घर आतमदीन।।
घोड़ा-रोड़ा-फोड़ा तीन। खर्च करावैं आतमदीन।।
केहरी-मेहरी, डेहरी तीन। बड़ी पियारी आतमदीन।।
लाठी, गाँठी, काठी तीन। पोढी चाह्यों आतमदीन।।
जोती, मोती, धोती तीन। उज्ज्वल चाहिये आतमदीन।।
नाती, पाती, जाती तीन। देखे तै सुख आतमदीन।।
घर, बर, दीपक तर ये तीन। ब्याह में देख्यो आतमदीन।।
चन्दन, बन्दन, स्यन्दन तीन। सब घर होय न आतमदीन।।
पानी, दानी, ज्ञानी तीन। रोके रुकैं न आतमदीन।।
कुई, बेनई, मनई तीन। बाग मे चहिये आतमदीन।।
लेखक, भेषक, मेढक तीन। टर्र न छाड़ै आतमदीन।।
गैला, घैला, थैला तीन। चौडे चहिये आतमदीन।।
कथरी, पथरी, सथरी तीन। दुःखी-सुखी घर मातमदीन।।
पैसा, भैसा, रैसा तीन। होत लड़ाके आतमदीन।।
अवरा-हर्र-बहेरा तीन। त्रिफला के रस आतमदीन।।

*प्रस्तुति*- **डॉ० हर्षवर्धन सिंह**

तीनों लोक भय मुक्त आपकी कृपा से देवि
जगत के भरण समृद्धि की विकासिनी
पूत "स्वच्छन्द" को दो चरण शरण अम्ब
हर सुख सम्पदा दो सिंह पीठ हासिनी

# जय श्री राम

हरे राम राम राम दशरथ पूत राम
राम राम राम राम कौशल्या दुलारे हो
राम राम राम राम भरताग्रज राम
राम राम राम राम लखन के प्यारे हो

राम राम राम शत्रुहन के वात्सल्य राम
राम राम शिव, हनुमान के सहारे हो
राम राम राम जानकी के प्राणनाथ राम
"त्रिभुवन" रक्षा हेतु धनुबाण धारे हो।



कवि घाघ की तरह बैसवारे के प्रसिद्ध कवि आत्मदीन जी हैं। उनकी एक रचना त्रिफला में- बैसवारी, भाषा, परम्परा व नीति चित्रण द्रष्टव्य है।

तीन तीन की बातैं बीन। नीचे लिखता आतमदीन।।
कोही, मोही, द्रोही तीन। इनसे भाग्यों आतमदीन।।
चाली, जाली, झाली तीन। पास न बैठ्यो आतमदीन।।
रोगी, सोगी, योगी तीन। देखन जायो आतमदीन।।
धन, धरती, युवती ये तीन। झगडे के घर आतमदीन।।
घोड़ा-रोडा-फोड़ा तीन। खर्च करावैं आतमदीन।।
केहरी-मेहरी, डेहरी तीन। बड़ी पियारी आतमदीन।।
लाठी, गॉठी, काठी तीन। पोढ़ी बाध्यों आतमदीन।।
जोती, मोती, धोती तीन। उज्ज्वल चाहिये आतमदीन।।
नाती, पाती, जाती तीन। देखे ते सुख आतमदीन।।
घर, बर, दीपक तर ये तीन। ब्याह में देख्यो आतमदीन।।
चन्दन, बन्दन, स्यन्दन तीन। सब घर होय न आतमदीन।।
पानी, दानी, ज्ञानी तीन। रोके रुकैं न आतमदीन।।
कुई, बेनई, मनई तीन। बाग में चहिये आतमदीन।।
लेखक, भेषक, मेढक तीन। टर्र न छाड़ै आतमदीन।।
गैला, घैला, थैला तीन। चौड़े चहिये आतमदीन।।
कथरी, पथरी, सथरी तीन। दुःखी-सुखी घर मातमदीन।।
पैसा, भैंसा, रैसा तीन। होत लड़ाके आतमर्दीन।।
अवरा-हर्र-बहेरा तीन। त्रिफला के रस आतमदीन।।

*प्रस्तुति*- **डॉ० हर्षवर्धन सिंह**

# विवशता

– ब्रह्मलीन शिवमंगल

मै नहीं आया तुम्हारे द्वार,
पथ ही मुड़ गया था।
गति मिली मैं चल पडा,
पथ पर कहीं रुकना मना था।
राह अनदेखी अनजाना देश,
सगी अनसुना था।

चाद सूरज की तरह चलता,
न जाना रात दिन है ?
किस तरह हम तुम गये मिल,
आज भी कहना कठिन है।
तन न आया मांगने अभिसार,
मन ही जुड गया था।
मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार,
पथ ही मुड़ गया था

देखा मेरे पखा चल,
गतिमय लता भी लहलहाई।
. ... आंचल में छिपाये मुख,
कली भी मुस्कुराई।
एक क्षण को थम गये डैने
समझ विश्राम का पल।
पर प्रबल संघर्ष बनकर
आ गयी आंधी सदल बल।
डाल झूमी पर न टूटी
किन्तु पक्षी उड़ गया था।
मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार,
पथ ही मुड गया था।

